ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

पवमान

(मासिक)

मूल्यः ₹ 20

वर्ष : 31 आश्विन-कार्तिक वि0स0 2076 अंक : 10 अक्टूबर 2019

मुद्रकः सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद

अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

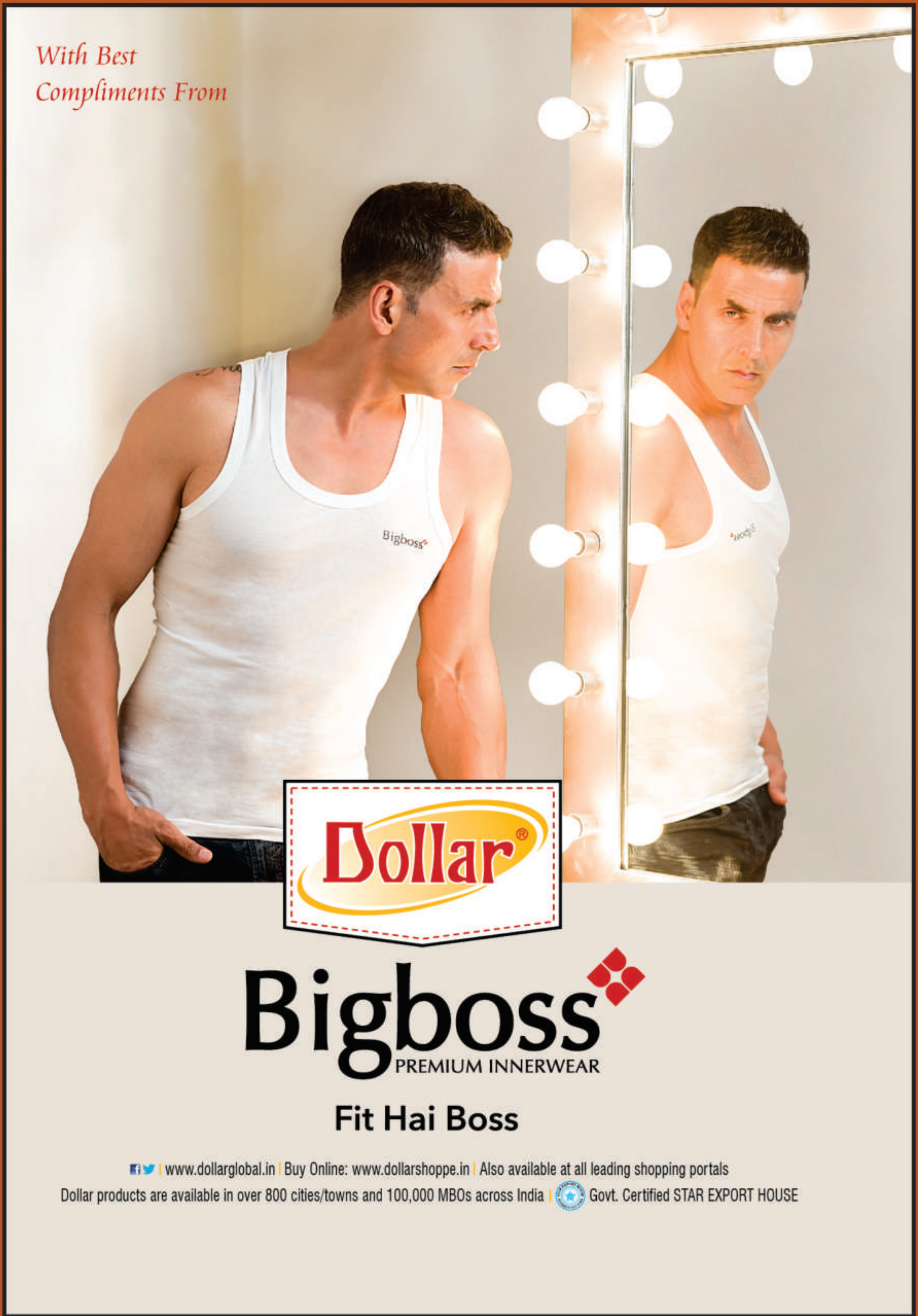
With Best
Compliments From
Dollar®
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ओ३म्

पवमान

वर्ष–31 अंक–10

आश्विन–कार्तिक 2076 विक्रमी अक्टूबर 2019

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120 दयानन्दाब्द : 195

★

–: संरक्षक :–

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

मो. : 9410102568

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

मोबाईल : 7310641586

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

शरदुत्सव 2019 का कार्यक्रम		2
सम्पादकीय	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
वेदाधारित नैतिक पद्धतियों से कल्याण	डॉ० कृष्णकांत वैदिक	5
ऋषि दयानन्द और दीपावली पर्व	मनमोहन कुमार आर्य	8
विजया दशमी अन्याय पर न्याय......	मनमोहन कुमार आर्य	12
यम–नियम	आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार	15
हनुमान जी का लंका प्रवेश	ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी	17
करतार सिंह सराभा	स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज	20
महर्षि देव दयानन्द के जीवन...	खुशहाल सिंह आर्य जी	23
शाकाहारी बनाम मांसाहारी		25
एक तेरी दरकार	महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती	26
टी.बी. की आयुर्वेदिक चिकित्सा	डॉ० भगवान दास जी	28
शराब छुड़ाने का आयुर्वेदिक उपचार	डॉ० भगवान दास जी	30
वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर (प्रथम स्तर)		31
वैदिक संध्या प्रशिक्षण शिविर, दैनिक यज्ञ एवं प्रातःकालीन–सांयकालीन मन्त्र प्रशिक्षण शिविर		32

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1.	कलर्ड फुल पेज	रु. 5000 / – प्रति माह
2.	ब्लैक एण्ड व्हाइट फुल पेज	रु. 2000 / – प्रति माह
3.	ब्लैक एण्ड व्हाइट हॉफ पेज	रु. 1000 / – प्रति माह

सदस्यों के लिए पवमान पत्रिका के रेट्स

1.	वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष)	रु. 200 / – वार्षिक
2.	15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य	रु. 2000 / –

नोटः पवमान पत्रिका फुटकर विक्रय के लिए उपलब्ध नहीं है।

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

नालापानी, देहरादून - 248008, दूरभाष: 0135-2787001

शरदुत्सव (अथर्ववेद यज्ञ एवं योग साधना शिविर)

कार्तिक कृष्ण पक्ष तृतीया से कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी तक

तद्नुसार बुधवार 16 अक्टूबर से रविवार 20 अक्टूबर 2019 तक मनाया जायेगा।

यज्ञ के ब्रह्मा एवं योग-साधना निदेशक : स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी महाराज

प्रवचनकर्ता : आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ एवं स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी

वेद पाठ : महर्षि दयानन्द आर्ष ज्योर्तिमठ गुरूकुल पौंधा देहरादून के ब्रह्मचारियों द्वारा

यज्ञ एवं कार्यक्रम संयोजक : श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी हरिद्वार

यज्ञ के व्यवस्थापक : पंडित सूरतराम शर्मा जी

भजनोपदेशक : पं. सत्यपाल पथिक, पं. रुवेल सिंह आर्यवीर

संगीतकार : श्रीमती मीनाक्षी पंवार एवं श्रीमती लीना जी

बुधवार 16 अक्टूबर से रविवार 20 अक्टूबर 2019 तक प्रतिदिन

योग साधना	प्रातः 5.00 बजे से 6.00 बजे तक	यज्ञ एवं संध्या	सायं 3.30 बजे से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ	प्रातः 6.30 बजे से 8.30 बजे तक	भजन एवं प्रवचन	रात्रि 7.30 बजे से 9.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	प्रातः 10.00 बजे से 12.00 बजे तक		

बुधवार 16 अक्टूबर 2019

ध्वजारोहण : प्रातः 9.00 बजे **विषय :** आर्य समाज का ध्वज ओ३म् ही क्यों

यज्ञ के यजमान : श्री विजय सचदेवा एवं परिवार

तपोवन विद्या निकेतन जूनियर हाईस्कूल का वार्षिकोत्सव : विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति
प्रधानाचार्य जी द्वारा वार्षिक रिपोर्ट का प्रस्तुतिकरण
"परिवार, समाज एवं राष्ट्र कैसे शक्तिशाली बनें" विषय पर तपोवन विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा विचार प्रस्तुति

प्रवचन विषय : सांय : सुखी जीवन का आधार पंच महा यज्ञ
1. ब्रह्म यज्ञ 2. देव यज्ञ 3. अतिथि यज्ञ 4. पितृ यज्ञ 5. बलिवैश्वदेव यज्ञ

वक्ता : पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, पं. सूरत राम शर्मा एवं स्वामी वेदानन्द सरस्वती

भजन : पं. सत्यपाल पथिक, पं. रूवेल सिंह आर्यवीर

गुरूवार 17 अक्टूबर 2019

भजन : प्रातः 10.00 बजे से पं. सत्यपाल पथिक एवं पं. उम्मेद सिंह विशारद द्वारा

प्रवचन : महर्षि दयानन्द जी के जीवन की विशेषताएं

वक्ता : पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ एवं पं. शैलेश मुनि सत्यार्थी

भजन एवं प्रवचन : सांय 7.30 से 9.30 बजे तक, श्रीमती लीना जी द्वारा भजन प्रस्तुति

प्रवचन विषय : स्वतंत्रता प्राप्ति में आर्य समाज की भूमिका

वक्ता : पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ एवं पं. पीयूष शास्त्री

शुक्रवार 18 अक्टूबर 2019

महिला सम्मेलन	:	प्रातः 10.00 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	श्रीमती मीनाक्षी पंवार एवं पं. रूवेल सिंह आर्यवीर
प्रवचन विषय	:	क्या नारी ही श्रेष्ठ परिवार की निर्मात्री है ?
वक्ता	:	आचार्या डॉ. अन्नपूर्णा, आचार्या डॉ. सुखदा सोलंकी एवं श्रीमती सरोज आर्या
कार्यक्रम संचालक	:	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा
भजन एवं प्रवचन	:	सांय 7.30 बजे से 9.30 बजे तक
भजनोपदेशक	:	पं. सत्यपाल पथिक एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार
प्रवचन विषय	:	वैदिक त्रैतवाद क्या है ?
वक्ता	:	पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ और आचार्य डॉ. धनंजय

शनिवार 19 अक्टूबर 2019

तपोभूमि के लिए शोभा यात्रा	:	प्रातः 7.00 बजे से 12.30 बजे तक, यज्ञ, भजन एवं प्रवचन के प्रातःकालीन समस्त कार्यक्रम तपोभूमि में सम्पन्न होंगे
भजन	:	पं. सत्यपाल पथिक, पं. रूवेल सिंह आर्यवीर एवं अतिथि कलाकारों द्वारा
प्रवचन विषय	:	दान प्रकृति का ऋत नियम है।
वक्ता	:	पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, पं. वेद वसु शास्त्री एवं स्वामी वेदानन्द सरस्वती
कवि सम्मेलन	:	रात्रि 8.00 बजे से 11.00 बजे तक
मुख्य अतिथि	:	श्री सुनील उनियाल गामा मा० मेयर नगर निगम, देहरादून
विशिष्ट अतिथि	:	वैदिक कवि श्री वीरेन्द्र राजपूत
अध्यक्ष	:	डॉ. आनन्द सुमन
संयोजक	:	प्रो. (डॉ.) सारस्वत मोहन मनीषी
कविगण	:	धर्मेश अविचल, बागी चाचा, सत्येन्द्र सत्यार्थी, सुधा शुद्धि, मो. इकबाल

रविवार 20 अक्टूबर 2019

समापन समारोह	:	प्रातः 10.00 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक
मुख्य अतिथि	:	माला राज्यलक्ष्मी शाह, सांसद, लोकसभा
विशिष्ट अतिथि	:	श्री उमेश शर्मा 'काऊ', विधायक, रायपुर, देहरादून
सभाध्यक्ष	:	श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री
अतिथियों का स्वागत	:	आश्रम के सचिव इं. प्रेम प्रकाश शर्मा द्वारा अतिथियों का स्वागत एवं आश्रम द्वारा संचालित गतिविधियों की संक्षिप्त रिपोर्ट
भजन एवं प्रवचन	:	पं. सत्यपाल पथिक, पं. रूवेल सिंह आर्यवीर, द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरूकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा भजन प्रस्तुति
प्रवचन विषय	:	भारत को विश्वगुरू बनाने के लिए धर्म आधारित राजनीति आवश्यक क्यो?
वक्ता	:	पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, आचार्या डॉ. अन्नपूर्णा, स्वामी वेदानन्द सरस्वती
सम्बोधन	:	अतिथियों द्वारा सम्बोधन
धन्यवाद ज्ञापन	:	आश्रम के अध्यक्ष श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री द्वारा धन्यवाद ज्ञापन
ऋषिलंगर	:	समापन समारोह के उपरान्त ऋषिलंगर की व्यवस्था

सप्रेम आमंत्रण

आदरणीय महोदय/महोदया, स्व. बाबा गुरुमुख सिंह जी एवं पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी परमहंस एवं महात्मा प्रभु आश्रित जी ने तपोवन आश्रम को साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान माना था। आपसे प्रार्थना है कि परिवार व ईष्ट मित्रों सहित यज्ञ एवं सत्संग में उपस्थित होकर हमें कृतार्थ करें एवं अपने-अपने समाज/धार्मिक सत्संगों से यह निमंत्रण हमारी ओर से निवेदित करने की कृपा करें। आपके उदार सहयोग के लिए अग्रिम धन्यवाद।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, मंजीत सिंह, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, अशोक कुमार वर्मा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, विजय कुमार, रामभज मदान, विनेश आहुजा।

एवं समस्त सदस्य, वैदिक साधन आश्रम सोसायटी

सरस्वती प्रेस, देहरादून। 9358865676

सम्पादकीय

चिन्तन - मनन

चिन्तन का अर्थ है सोचना विचारना। किसी सुने हुए, पढ़े हुए या विचारणीय विषय पर एकान्त स्थान में बैठकर गम्भीर विचार करना मनन है। मननशीलता का गुण इसमें होने के कारण मानव मनुष्य कहलाता है। जैसा मन का स्वभाव या गुण होता है वैसा है वैसा ही मनुष्य होता है। मन आत्मा का सर्वोपरि साधन है। मन का कार्य है आत्मा से प्राप्त संदेशों को क्रियान्वित कराने का संकल्प करना। यह ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों से उहापोह कराकर उन्हे कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। मन की गुणवत्ता पर ही मनुष्यपन निर्भर करता है अन्यथा पतित मन होने पर उसका व्यवहार पशुवत हो जाता है। हमारे अन्तःकरण के अन्तर्गत मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार हैं। कार्य के विभाजन को देखते हुए मन और चित्त भिन्न–भिन्न हैं। चित्त का काम चिन्तन करना है और मन का काम मनन करना है। चिन्तन चित्त में होने के कारण उसके साथ बुद्धि का समावेश रहता है। शास्त्रों में बुद्धि को निश्चयात्मक बताया गया है। इस गुण के कारण यह किसी भी विषय का निश्चय करा देती है। चिन्तन निर्विकल्प स्थिति है जो ज्ञानपूर्वक होती है। आध्यात्मिक जगत् में केवल आत्मा और परमात्मा का चिन्तन होता है, किसी अन्य विषय का नहीं।

मनुष्य ज्ञानरहित अवस्था में ही चिन्ता करता है। वेद में कहा गया है कि मनुष्य चिन्ता न करें क्योंकि यह हमें पतन की ओर ले जाकर हानि पहुंचाती है। शास्त्रों में चिन्ता और चिता पर विचार करते हुए बताया गया है कि मनुष्य चिन्ता करके चिता में पहुंच जाता है परन्तु यदि वह चित्त में चिन्तन करे तो परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर हो जाता है। चिन्तन साधना की प्रारम्भिक अवस्था है। वह अपने चित्त को योग साधना से बाहरी कार्यों और विषयों से हटाकर अपनी चित्तवृत्तियों का निरोध कर लेता है। इस स्थिति को गीता में कामनाओं से रहित होकर योगनिष्ठ होना बताया गया है। ऐसा योगनिष्ठ साधक आत्मानन्द का अनुभव प्राप्त करते हुए अपने जीवन के मुख्य लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। मन को वेद में हृत–प्रतिष्ठ बताया गया है अर्थात मन हृदय में स्थित है, मष्तिष्क में नहीं। आत्मा को सुसारथि बताया गया है जो चिन्तन–मनन के विवेक से सम्पन्न होकर जीवन रुपी रथ का संचालन करता है। चिन्तन और मनन मनुष्य के लिए अत्यंत आवश्यक कार्य हैं। जीवन में यदि प्रगति करनी है और आध्यात्मिक दृष्टि से अपने को उच्च स्थान तक पहुँचाना है तो इसके लिए चिन्तन व मनन अवश्य करना चाहिए। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनके द्वारा चिन्तन से अपने विचारों को उन्नत करके ही आध्यात्मिक प्रगति प्राप्त की गई है। विना विचार किए किसी विषय को समझा नहीं जा सकता है और उसकी गहराई तक नहीं पहुँचा जा सकता है। इसी प्रकार बुद्धि में विषय का मनन करके निश्चयात्मक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार ज्ञानी बनकर ही वह दूसरे मनुष्यों को मार्ग दिखाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। ऐसे व्यक्ति ही अपने जीवन में उत्कृष्ट आध्यात्मिकता प्राप्त कर सकते हैं और वे अन्यों के लिए अनुकरणीय बन जाते हैं।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

वेदाधारित नैतिक पद्धतियों से ही विश्व का कल्याण सम्भव है

–डॉ० कृष्णकांत वैदिक

'धर्म' शब्द धृञ् धारणे धातु से 'मन' प्रत्यय करके निष्पन्न होता है। इसका अर्थ है–धारण, पोषण और रक्षा करना। इसलिए जो धारण किया जाता है, वह धर्म है। वैशेषिक दर्शन में महर्षि कणाद कहते हैं– 'यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः' अर्थात् जिन कर्मों का अनुष्ठान करने से मनुष्य जीवन का अभ्युदय हो और अन्त में निःश्रेयस की प्राप्ति हो वह धर्म है। ऋग्वेद के एक मन्त्र (01/22/18) में कहा गया है–

'त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्'।। अर्थात् कभी विनाश को न प्राप्त होने वाला, जगत् का रक्षक परमेश्वर समस्त धर्मों को धारण करता हुआ तीनों प्रकार के जानने योग्य और प्राप्त होने योग्य पदार्थों को इस मूल कारण से ही विविध रूपों में बनाता है। मनुस्मृति में कहा गया है–

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

अर्थात् इसी ब्रह्मवर्त्त देश में उत्पन्न हुए विद्वानों के सानिध्य से पृथ्वी पर रहने वाले सब मनुष्य अपने–अपने आचरण अर्थात् कर्त्तव्यों की शिक्षा ग्रहण करें। मनुस्मृति में धर्म के धृति, क्षमा आदि दस लक्षण बताए गए हैं। यदि मनुष्य इन पर आचरण करते हुए जीवन बितायें तो सारे विश्व में शान्तिमय वातावरण पैदा कर समस्त मानव जाति को सुखी बनाया जा सकता है। चाणक्य के अनुसार सुख का मूल धर्म है, धर्म का मूल अर्थ है, अर्थ का मूल राज्य है, राज्य का मूल इन्द्रिय–जय है। इन्द्रिय–जय या संयम के बिना कोई राज्य सुरक्षित नहीं रह सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कहा है– 'कहने सुनने–सुनाने, पढ़ने–पढ़ाने का फल यही है कि जो वेद और वेदानुकूल स्मृतियों में प्रतिपादित धर्म का आचरण करना। इसलिए धर्माचार में सदा युक्त रहे।' इसी ग्रन्थ में यह भी कहा गया है– 'जो सत्य–भाषणादि कर्मों का आचरण करना है, वही वेद और स्मृति में कहा हुआ आचार है।' इस प्रकार धर्माचरण से ही धर्म की प्राप्ति, सिद्धि एवं अभिवृद्धि देखकर मुनियों ने सब तपस्याओं का श्रेष्ठ मूल आधार धर्माचरण को ही स्वीकार किया है। वेदों के उपदेशों का सार ही उपनिषदों और आरण्यकों में दिया गया है। तैत्तिरीय उपनिषद् को तो एक प्रकार से नैतिक शिक्षा का भण्डार ही कह सकते हैं। इसके एकादश अनुवाक में वेद–विद्या पढ़ा चुकने के बाद आचार्य अन्तेवासी शिष्य को दीक्षान्त–भाषण में उपदेश देता है – सत्य बोलना। धर्माचरण करना। स्वाध्याय से प्रमाद मत करना। आचार्य को जो प्रिय हो वह दक्षिणा मे उसे देकर ब्रह्मचर्याश्रम के अनन्तर गृहास्थाश्रम में प्रवेश करना और प्रजा के सूत्र को मत तोड़ना। सत्य बोलने से प्रमाद न करना, जिस बात से तुम्हारा भला हो उससे प्रमाद मत करना। अपनी विभूति बढ़ाने में प्रमाद मत करना। स्वाध्याय और प्रवचन में प्रमाद मत करना। माता, पिता, आचार्य और अतिथि को देव मानने का उपदेश किया गया है। विद्वानों के उपदेशों को ध्यान से सुनने और किसी विवाद में न पड़ने को कहा गया है।

नीति का अर्थ है मनुष्य के जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के साधन—रूप नियम, जिन पर चल कर इस जीवन और परलोक (पुनर्जन्म) में कल्याण की प्राप्ति हो। आचार शिक्षा का सम्बन्ध व्यक्तिगत जीवन से है, जिसमें आत्मोन्नति पर बल दिया गया है। नैतिक शिक्षा में व्यक्ति के आचार—विचार की शुद्धि के साथ ही पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक और प्राणि मात्र से सम्बन्धित विषयों पर विचार किया जाता है। मनुष्य अपने—पराये, सजातीय—विजातीय, शत्रु—मित्र, परिचित— अपरिचित, आदि से किस प्रकार का व्यवहार करे यह नैतिक शिक्षा बताती है। इसके द्वारा समाज के प्रत्येक व्यक्ति का वास्तविक कल्याण होता है। नैतिक शिक्षा का मूल वेदों में मिलता है। 'सर्वं वेदात् प्रसिध्यति'— इस भारतीय सिद्धान्त से ज्ञात होता है कि अपौरुषेय वेदों से ही समस्त विद्याएं प्रादुर्भूत हुई हैं। वेदों में विधि और निषेध अर्थात् मनुष्यों के कर्तव्य और अकर्तव्य कर्म वर्णित हैं। वेदों के साथ ही ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, गीता, महाभारत, रामायण, पंचतन्त्र, विदुर, शुक्र, भर्तृहरि, आदि ऋषियों के नीति ग्रन्थों में इनका विस्तृत वर्णन है।

जिससे अभ्युदय धारण हो वह धर्म है और इस अभ्युदय को प्राप्त करने के लिए जो उपाय हैं वे नीति कहलाते हैं, इस प्रकार देखा जाये तो दोनों का एक ही अर्थ होता है। कुछ लोग लौकिक अभ्युदय को प्राप्त करने के साधन को 'नीति' और पारलौकिक साधन को धर्म कहते हैं। नीति या नैतिकता से ही शास्त्र और धर्म प्रतिष्ठित होते हैं। नैतिकता के अभाव में शास्त्र और धर्म नष्ट हो जाते हैं। धर्मविहीन नैतिकता का कोई औचित्य नहीं है, भले ही यह आरम्भ में कुछ चमत्कारिक सफलता दिला दे परन्तु अन्ततोगत्वा वह पतन की ओर ही ले जायेगी। मनस्मृति में कहा गया है— 'धर्मो रक्षति रक्षितः' अर्थात् हमारे जीवन में जो स्वाभाविक धर्म और संयम रहता है, वह हमारी रक्षा करता है और जो हम धर्मपूर्वक आचरण या सदाचार करते हैं, वह धर्म हमारी रक्षा करता है। नीति या नैतिकता का मूल ही सदाचार है। धर्म की दृष्टि से नैतिकता के चार पाद हैं—सत्य, तप, दया और पवित्रता। इनमें सत्य को सर्वोपरि माना गया है। सामवेद में कहा गया है—'स्तुहि सत्यधर्माणाम्' अर्थात् सत्यनिष्ठ की प्रशंसा करे। मुण्डकोपनिष्द् में कहा गया है—

सत्यमेव जयति नानृतं सत्येन पन्था वितो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्।।

अर्थात् सत्य की विजय होती है, असत्य की नहीं। सत्य धाम में गमन करते हैं जहां सत्य का वह परम आश्रय परमात्मा अनावृत रूप से स्थित है। तप का अर्थ है— पीड़ा सहना, घोर कड़ी साधना करना, मन का संयम रखना आदि। महर्षि दयानन्द के अनुसार "जिस प्रकार सोने को अग्नि में डालकर इसका मल दूर किया जाता है उसी प्रकार सद्‌गुणों और उत्तम आचरणों से अपने हृदय, मन और आत्मा के मैल को दूर किया जाना तप है। गीता में तप तीन प्रकार के बताए गए हैं— शारीरिक, जो शरीर से किया जाये। वाचिक, जो वाणी से किया जाये और मानसिक, जो मन से किया जाये। देवताओं, गुरुओं और विद्वानों की पूजा अर्थात यथा योग्य सेवा और सुश्रूषा करना, ब्रह्मचर्य और अहिंसा शारीरिक तप हैं। ब्रह्मचर्य का अर्थ हैः शरीर के बीजभूत भाग तत्त्व की रक्षा करना और ब्रह्म में विचरना या अपने को सदा परमात्मा की गोद में महसूस करना। किसी को मन, वाणी और शरीर से हानि न पहुंचाना अहिंसा है। हिंसा और अहिंसा केवल शारीरिक ही नहीं अपितु वाचिक और मानसिक भी होती हैं । वाणी के तप से

अभिप्राय हैः ऐसी वाणी बोलना जिससे किसी को हानि न पहुंचे। सत्य, प्रिय और हितकारक वाणी का प्रयोग करना चाहिए। वाणी के तप के साथ ही स्वाध्याय की बात भी कही गई है। वेद, उपनिषद आदि सद्ग्रन्थों का नित्य पाठ करना और अपने द्वारा किये जा रहे नित्य कर्मों पर भी विचार करना स्वाध्याय है। मन को प्रशन्न रखना, सौम्यता, मौन, आत्मसंयम और चित्त की शुद्ध भावना यह सब मन का तप है। मनु कहते हैं कि तप से मन का मैल दूर होता है और पाप का नाश हाोता है। शास्त्र कहते हैं कि अपने को ऊपर उठाना है तो तपस्वी बनो। अथर्ववेद में कहा गया है– 'ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं वि रक्षति' अर्थात् ब्रह्मचर्य एवं तप से राजा विविध प्रकार से राष्ट्र की रक्षा करता है। दया की महिमा भी नैतिक कृत्यों के रूप में शास्त्रों में सर्वत्र मिलती है। तुलसीदास कहते हैं–

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये जब लौं घट में प्राण।।

मनुष्यों को न केवल शरीर अपितु मन, बुद्धि और आत्मा को भी पवित्र रखना चाहिए। मनुस्मृति में कहा गया है–

अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मनः सत्येन शुद्ध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति।।

अर्थात् जल से शरीर के बाहरी अवयव, सत्याचरण से मन, विद्या और तप से जीवात्मा और ज्ञान या विवेक से बुद्धि निश्चित रूप से पवित्र होती है। मानव–जीवन में जो कुछ श्रेष्ठ और नैतिकतापूर्ण है, उसके पीछे विवेक विद्यमान होता है। नीति बोध से जब धर्म का उदय होता है तो मनुष्य अपनी अपूर्णता के प्रति जागरूक हो जाता है। व्यक्तित्व का आध्यात्मिक विकास दिव्य जीवन का शिलान्यास है जो नीतिबोध पर निर्भर रहता है। नीतिबोध की सार्थकता भी दिव्य जीवन की ओर अग्रसर होने में ही है।

सम्पूर्ण विश्व में भारत जैसे धर्माधारित नैतिक मूल्यों का विशाल भण्डार नहीं है और न ही आज की ज्वलन्त समस्याओं को दूर करने हेतु कोई दूसरा मार्ग है। केवल वैदिक सनातन नैतिक पद्धतियों से ही विश्व का कल्याण सम्भव है। यदि अपने नैतिक मूल्यों को सुरक्षित रखना है तो हमें उपरोक्त शास्त्रों से प्रेरणा लेनी होगी। सबसे पहले स्वयं को सुधारते हुए सत्य, प्रेम, दया, अहिंसा, निरव्यसन, जितेन्द्रियता, अक्रोध, अलोभ, परोपकारिता आदि सद् गुणों को अपनाना होगा। नैतिकता के प्रारम्भिक संस्कार माता की गोद से ही बनते हैं। माता की शिक्षा, उसके आदर्श संस्कार और घर का वातावरण बच्चों के कोमल मन का विकास करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। माता–पिता और आचार्य बालक/बालिकाओं के आदि गुरु होते हैं, वे इन आदर्शों को संस्कार रूप में बच्वें में स्थापित करें क्योंकि मनुष्य जीवन की विकासधारा उसके शैशव–कालीन अनुभवों से निर्धारित मार्ग का ही अनुसरण करती है। धर्म, संस्कृति और इतिहास से बच्चों को उपदेशात्मक कथाएं सिखलायी जानी चाहिएं जिसे उनमें ईश्वर भक्ति और समर्पण की भावना आएं। इस प्रकार की शिक्षा से युवा पीढ़ी में मनसा– वाचा–कर्मणा सत्प्रवृत्तियां का विकास हो सकेगा। यह उनके चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और उनमें सत्य, दया, त्याग तप, विनय, न्याय प्रियता और राष्ट्र प्रेम आदि के गुण विकसित होंगे। प्राचीन परम्परागत नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करके ही हम विश्व में एक आदर्श और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं।

ऋषि दयानन्द और दीपावली पर्व

—मनमोहन कुमार आर्य

वेद मनुष्यों को ज्ञानी बनाकर देश व समान को ज्ञान से लाभान्वित करने की प्रेरणा देने के साथ उसकी अन्याय व शोषण आदि से रक्षा करने तथा अन्नादि पदार्थों के अभावों को दूर करने के लिये किसी एक कार्य को चुनने व करने की प्रेरणा देते हैं। कृषि व वाणिज्य आदि कार्यों को करके देश से अभाव दूर करने वाले मनुष्यों को वैश्य वर्ण में सम्मिलित किया जाता है। दीपावली वैश्य वर्ण का पर्व है जिसे सामाजिक समरसता की दृष्टि से सभी देशवासी मिलकर प्राचीन काल से मनाते आ रहे हैं। कार्तिक महीने की अमावस्या के दिन इस पर्व को मनाये जाने के अन्य कारण भी हैं। यह पर्व वर्षा ऋतु की समाप्ति के बाद मनाया जाता है। वर्षा ऋतु के कारण गृहों के भवनों में नमी व सीलन आ जाती है। भवनों में लिपाई पुताई सहित मरम्मत आदि की भी आवश्यकता होती है। दीपावली से पूर्व इन कार्यों को करके गृहों को स्वच्छ व सुन्दर बनाया जाता है। अशिक्षित लोगों में यह जनश्रुति है कि इस दिन घर को लीप—पोत कर उसके लक्ष्मी पूजा करने से धन की लक्ष्मी घर में प्रवेश करती है और परिवार धन सम्पन्न होता है। हमने अपने परिवार में बचपन में ही इस प्रकार की भावनाओं को देखा है। यहां तक की रात्रि में घर के मुख्य द्वार को खोलकर सोते थे जिससे लक्ष्मी दरवाजे को बन्द देखकर लौट न जाये। समय के साथ मनुष्य अपनी सोच एवं विद्या आदि के द्वारा अपने पर्वों में भी सुधार करता रहता है। महर्षि दयानन्द (1825—1883) के प्रादुर्भाव और उनके वेद प्रचार के कार्यों से देश में जागृति आयी और लोग पर्व का महत्व समझने लगे। पर्व का अर्थ मनुष्य के जीवन में निराशा को दूर कर उत्साह एवं उमंग का संचार करना होता है। इसके साथ प्रमुख धार्मिक पहलुओं को भी जोड़ दिया जाता है जिससे हम अपने धर्म व संस्कृति को जानकर उससे जुड़े रहें और हमारी आस्था व निष्ठा धर्म व संस्कृति के मूल तत्वों सदाचार, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्रणिधान आदि में बनी रहे। ऋषि दयानन्द ने हमें बताया था कि मनुष्य को सभी शुभ अवसरों पर सन्ध्या एवं देवयज्ञ अग्निहोत्र का अनुष्ठान अवश्य करना चाहिये। इससे हम ईश्वर से जुड़ते हैं और जीवन के सभी छोटे व बड़े कार्यों में हमें

ईश्वर का सहाय प्राप्त होता है। ईश्वर की स्तुति व प्रार्थना करने का एक लाभ यह भी होता है कि हम अहंकार से बचते हैं। ईश्वर सबसे महान है और वही हमारे कर्मों के आधार पर हमें सुख व दुःख प्रदान करता है। यदि हम कुछ भी अनुचित करेंगे तो ईश्वर उसका दुःख रूपी दण्ड अवश्य देगा। इस ज्ञान से हम पक्षपात व अन्याय रूपी कर्मों से बच कर अपने जीवन को दुःखों से बचाते और सुखों से युक्त रखते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के मार्ग पर आगे बढ़ते हैं।

दीपावली पर्व पर खरीफ की फसल किसान के घर में आती है। चावल इस फसल का प्रमुख अन्न होता है। इसे प्रतीक मानकर इसको भून कर खील बनायी जाती है और इससे यज्ञ सम्पन्न कर इसका पड़ोसियों में वितरण कर भक्षण किया जाता है। हम बचपन में खील को चाय में डालकर खाते थे और इसके साथ चीनी से बने बतासे तथा खिलौने साथ में खाते थे तो यह अत्यन्त स्वादिष्ट लगता था। आज के बच्चे सम्पन्नता आदि के कारण इसका सेवन छोड़ चुके हैं। नई फसल के स्वागत के लिये ही किसान व अन्य सभी मनुष्य मिलकर इस दीपावली के पर्व को मनाते हैं। यही दीपावली पर्व का मुख्य आधार है। मनुष्य के जीवन में सबसे अधिक महत्व वायु, जल और अन्न का होता है। परमात्मा ने वायु और जल को सर्वत्र सुलभ बनाया है। मनुष्य को इनको उत्पन्न नहीं करना होता। अन्न उत्पन्न किया जाता है। किसान व सारा देश अन्न पर ही आश्रित है। यदि अन्न न हो तो यह संसार नहीं चल सकता। अन्न मनुष्य जीवन की प्राथमिक अनिवार्य आवश्यकता है। पर्याप्त अन्न न मिले तो मनुष्य कुपोषण से ग्रस्त होकर शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। अतः किसान द्वारा खरीफ की फसल की प्राप्ति पर समस्त देशवासियों में प्रसन्नता, उत्साह एवं उमंग का वातावरण होना स्वाभाविक होता है। इसी की अभिव्यक्ति दीपावली पर्व के रूप में होती है।

एक किंवदन्ती यह भी प्रचलित है कि दीपावली के दिन ही मर्यादा पुरुषोत्तम राम लंका में रावण का वध कर सीता और लक्ष्मण सहित अयोध्या लौटे थे। अयोध्यावासी राम के आगमन से अतीव प्रसन्न थे। सबसे अधिक प्रसन्नता भरत जी को थी जिन्होंने राम के वियोग में 14 वर्ष बहुत ही कष्टों एवं तपस्यापूर्वक व्यतीत किये थे। अतः राम के 14 वर्षों बाद अयोध्या आगमन के उपलक्ष्य में दीपावली के द्वारा अपनी प्रसन्नता को व्यक्त किया गया था। बाल्मीकि रामायण के अनुसार रामचन्द्र जी ने वर्षा ऋतु की समाप्ति के बाद सीता जी की खोज आरम्भ कराई थी। उसके बाद रामेश्वरम से लंका तक सेतु तैयार किया गया था। सेतु तैयार होने के बाद सेना लंका पहुंची थी और राम–रावण युद्ध हुआ था। आजकल तो छोटे–छोटे सेतुओं में वर्षों लग जाते हैं। इस सेतु के बनने में कितना समय लगा होगा, इसका अनुमान करना कठिन है। रामायण के विवरण से स्पष्ट अनुमान होता है कि कार्तिक अमावस्या के अवसर पर तो सीता माता की खोज हो रही थी अथवा खोज हो जाने के बाद समुद्र पर सेतु बन्धन का कार्य आरम्भ किया गया होगा। अतः दीपावली के अवसर पर रामचन्द्र जी के अयोध्या लौटने की बात ऐतिहासिक दृष्टि से युक्त नहीं है तथापि रामचन्द्र जी के महान् व्यक्तित्व के कारण यदि हम इस पर्व पर उनको भी स्मरण करते हैं तो

हमारी दृष्टि में ऐसा करना अच्छी बात है। ऐसा करने से हमारे धर्म और संस्कृति की रक्षा होती आयी है।

दीपावली के अवसर पर कुछ अनुचित प्रथायें भी प्रचलित हैं। द्यूत या जुआ खेलना निन्दनीय परम्परा है। वैदिक धर्म में द्यूत को बहुत बुरा बताया गया है। मनुष्य को कभी भी इसका सेवन नहीं करना चाहिये। दीपावली के अवसर पर बम व पटाखे फोड़ने का औचीत्य समझ में नहीं आता। ऐसा करके हम अपनी प्राण वायु को दूषित करने के अपराधी बनते हैं। इसका त्याग करना ही श्रेयस्कर है। दीपावली पर मिठाईयों का आदान–प्रदान भी खूब होता है। देश के मांसाहारियों के कारण आज शुद्ध दुग्ध मिलना दुष्कर है। अतः देश में कृत्रिम दूध व मावे से मिठाईयां बनाई जाती है जो विष का काम करती हैं। मिठाईयों का सेवन भी स्वास्थ्य के लिये अहितकर होता है। मिठाईयों के सेवन व इसके वितरण से बचने का भी प्रयत्न करना चाहिये। खील, बतासे और चीनी के बने खिलाने हमारी पुरानी परम्परा में आते हैं। इसी का सेवन एवं वितरण उचित प्रतीत होता है। मिठाईयों के वितरण में धन–शक्ति के दिखावे से संस्कृति व परम्पराओं की रक्षा नहीं हो सकती। दीपावली को एक धार्मिक पर्व के रूप में मनाना उचित है। इस अवसर पर वेद पाठ एवं वेदों का स्वाध्याय करना चाहिये। ईश्वर का ध्यान एवं वृहद यज्ञ का आयोजन कर वायु शुद्धि करनी चाहिये। राम, कृष्ण एवं दयानन्द जी भी सन्ध्या व यज्ञ करते कराते थे। वह हमारे धर्म व संस्कृति के मूर्तरूप हैं। उनका स्मरण और उनके अनुरूप जीवन बनाना हमारा कर्तव्य है। हम प्रतिदिन ईश्वर व अपने इन महापुरुषों को स्मरण करेंगे तो हम आज भी इनसे सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा ग्रहण कर सकेंगे जिससे हमारा जीवन सार्थक होगा और हम धर्म के मार्ग पर चलकर मोक्ष के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश लिखकर वैदिक धर्म एवं संस्कृति के प्रचार व प्रसार का चिरकाल के लिये प्रबन्ध कर दिया है। आर्यसमाज सत्यार्थप्रकाश का प्रचार करता है। आर्यसमाज से इतर जिज्ञासु बन्धु भी इस ग्रन्थ को प्राप्त कर वैदिक धर्म में दीक्षित हो सकते हैं। ऐसे बहुत से विद्वान हुए हैं जिनका जीवन सत्यार्थप्रकाश से ही बदल गया तथा वह इसके द्वारा ईश्वर के भक्त और वैदिक धर्म के अनुयायी बने।

ऋषि दयानन्द ने जीवन से जुड़े सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों का समाधान वेद से प्राप्त किया था। वेद ज्ञान के भण्डार हैं जिनका आविर्भाव सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा से हुआ है। इसका उद्देश्य मनुष्यों को सन्मार्ग बताना और दुःखों से पृथक रखकर उन्हें सुख प्रदान करने सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष प्राप्त कराना है। वेद एवं वेदों पर आधारित ऋषियों के दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थ ही ऐसे ग्रन्थ हैं जो मनुष्य की सभी शंकाओं का समाधान करते हैं और उन्हें दुष्कर्मों से बचाते तथा उन्हें ईश्वर का सान्निध्य प्रदान कराते हैं। वेदाध्ययन एवं तदनुरूप आचरण करने से मनुष्य सुखों से युक्त होकर अभ्युदय को प्राप्त होता है तथा भावी जन्मों में उसकी आत्मा की उन्नति होकर वह मोक्ष के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल

होता है। ऋषि दयानन्द ने मथुरा में सन् 1863 में अपने गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती की पाठशाला में विद्या पूरी कर देश भर में घूमकर वैदिक ज्ञान का प्रचार व प्रसार किया था। उनके समय में हमारे देश व विश्व में सर्वत्र अविद्या का प्रसार था। विद्या के प्रसार से अविद्या के पोषक अज्ञानी व स्वार्थी लोग उनके शत्रु बन गये थे। इस कारण जोधपुर में उन्हें विषपान कराने का षडयन्त्र किया गया था। यह विषपान ऋषि दयानन्द जी की मृत्यु का कारण बना। दीपावली 30 अक्टूबर सन् 1883 के ही दिन सायं लगभग 6.00 बजे उन्होंने मृत्यु का वरण करते हुए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था। ऋषि दयानन्द के दीपावली के दिन अपने प्राणों का उत्सर्ग करने से दीपावली पर्व में एक प्रमुख रूप में यह घटना भी जुड़ गई। वैदिक धर्मी आर्यों के लिये दीपावली का महत्व जहां एक प्राचीन पर्व के रूप में हैं वहीं ऋषि दयानन्द के बलिदान पर्व के रूप में भी है। यह अवसर ऋषि दयानन्द के वेदोद्धार के महान कार्यों को स्मरण कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करने का दिवस भी होता है। यदि वह न आते तो यह कहना कठिन है कि हमारा धर्म व संस्कृति विधर्मियों के प्रहारों व षड्यन्त्रों से बच पाती अथवा नहीं। देश भी आजाद होता, इसकी भी सम्भावना नहीं थी। महर्षि दयानन्द ने समाज को सद्ज्ञान देकर लोगों को उनके कर्तव्यों का बोध कराया था। उन्होंने ईश्वरोपासना एवं देवयज्ञ के प्रचार सहित स्त्रियों के सम्मान, शिक्षा व विद्या के विस्तार एवं देश की उन्नति सहित देश को स्वराज्य की प्राप्ति का मन्त्र व प्रेरणा भी की थी। ऋषि दयानन्द ने देश व विश्व में समग्र आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्रान्ति की थी। उन्होंने देश में प्रचलित सभी अन्धविश्वासों, मिथ्या परम्पराओं व प्रथाओं पर वैदिक ज्ञान के अनुसार प्रहार कर उनका निवारण करने का अभूतपूर्व एवं प्रभावशाली प्रयत्न किया था। राम व कृष्ण के बाद दयानन्द जैसा महान पुरुष इस धरती पर कहीं उत्पन्न नहीं हुआ। ऋषि दयानन्द ने ही ईश्वर का हमसे परिचय कराया है। वैचारिक धरातल पर उन्होंने हमें ईश्वर का प्रत्यक्ष भी कराया। हम ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव व स्वरूप से परिचित होने सहित उसकी प्राप्ति के साधन सन्ध्या–उपासना एवं योगाभ्यास आदि से परिचित हुए। उनसे प्राप्त ज्ञान से ही हमारी आत्मा उन्नत होकर ज्ञान के आलोक से प्रकाशित हुई है। हम जन्म व मृत्यु के रहस्य को जान पाये हैं। सद्कर्मों के महत्व एवं दुष्कर्मों के परिणामों से भी उन्होंने ही हमें अवगत कराया था। उनके समस्त मानव जाति पर अगणित ऋण है जिन्हें चुकाया नहीं जा सकता। उन्होंने ही आध्यात्मिक उन्नति के लाभों को बताकर भौतिक उन्नति से जुड़े जीवन को पतित व भविष्य को अन्धकारयुक्त करने वाली चेष्टाओं से भी सबको सावधान किया है। हम सत्यार्थप्रकाश व वेद की सहायता से सत्यासत्य का निर्णय कर सत्य का अनुसरण करें और अपने जीवन सहित अपने देश का भी कल्याण करें। अन्धविश्वासों व अविद्या से बचे रहे। यही उनके जीवन का सन्देश है। दीपावली मनाते हुए हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को स्मरण कर उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिये और अपने जीवन को अध्यात्म एवं सामाजिक उन्नति से युक्त करना चाहिये।

विजया दशमी अन्याय पर न्याय की विजय का पर्व है

—मनमोहन कुमार आर्य

देश में आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की दशमी को विजया दशमी पर्व मनाने की परम्परा है। इतिहास में इसका उल्लेख नहीं मिलता कि इसका आरम्भ कब हुआ। अनुमान से यह पर्व सैकड़ों व सहस्रों वर्षों से मनाया जा रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारत के बाद जब वेदों का प्रचार व प्रसार बन्द हो गया, वेद विलुप्ति के कगार पर पहुंच रहे थे, तब समाज के हितैषी महापुरुषों ने धर्म व संस्कृति की रक्षा की दृष्टि से इस पर्व को प्रचलित किया होगा। मर्यादा पुरुषोत्तम राम वैदिक धर्म व संस्कृति के मूर्तरूप हैं। राम के जीवन व चरित्र में वैदिक आदर्श गुणों की पराकाष्ठा पाई जाती है। ऐसे महापुरुष को यदि हम स्मरण करते हैं और उनके जीवन आदर्शों पर विचार करते हैं तो ऐसा करने से हमारी प्राचीन सनातन वैदिक धर्म व संस्कृति सुरक्षित रह सकती है और ऐसा ही हुआ भी है। मुस्लिम काल के वैदिक सनातन धर्म विरोधी मानवता के शत्रु क्रूर शासकों ने वैदिक धर्म को नष्ट करने की कोई कसर नहीं छोड़ी। हमारे धार्मिक ग्रन्थों को जलाया गया, मन्दिर तोड़े गये, अत्याचार व अन्याय की प्रतीक तलवार के बल पर हिन्दुओं का धर्मान्तरण किया गया। हमारी बहू व बेटियों को भ्रष्ट करने आदि अनेक प्रकार के अत्याचार इन नराधम लोगों ने किये तथापि हमारा धर्म व संस्कृति समाप्त नहीं हुई। इसका एक ही कारण है कि हमारे धर्म व संस्कृति के मूर्तरूप मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा योगेश्वर कृष्ण तथा इनके आदर्शों के जनता के दिलों पर प्रभाव ने ही वैदिक धर्म व संस्कृति को बचाये रखा। रामनवमी, विजयादशमी, कृष्ण जन्माष्टमी जैसे पर्वों का हमारे धर्म एवं संस्कृति की रक्षा में सर्वोपरि महत्व है।

स्वाध्याय का मनुष्य के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। मनुष्य जैसा साहित्य पढ़ता है वैसा ही उसका जीवन बनता है। प्राचीन काल में हमारे देश में गुरुकुलों में अध्ययन करने व बाद गृहस्थ आश्रम में घरों में वेद व उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति सहित रामायण व महाभारत आदि ग्रन्थों के पढ़ने की परम्परा थी। हमने भी इन ग्रन्थों को पढ़ा है। इनका अध्ययन मनुष्य को वैदिक विचारधारा से न केवल परिचित कराता है अपितु वैदिक विचारधारा की महत्ता व उसकी श्रेष्ठता का विश्वास भी आत्मा में विद्यमान परमात्मा की ओर से अनुभव होता है। महाभारत काल के बाद वेद, उपनिषद एवं दर्शन आदि सभी साहित्य के संस्कृत में होने तथा उन दिनों इन धार्मिक ग्रन्थों का मुद्रण व प्रकाशन न होने के कारण सामान्य मनुष्यों तक उनकी पहुंच नहीं थी। ज्ञान प्राप्ति के लिये मनुष्यों को आश्रमों में महात्माओं व संन्यासियों की शरण में जाना होता था। आज का युग इस दृष्टि से क्रान्तिकारी परिवर्तन को अपने भीतर समेटे हुए है। आज हम किसी भी धार्मिक व सामाजिक विषयक ग्रन्थ को उसके जन–भाषाओं मे अनुवाद सहित प्राप्त कर सकते हैं और कुछ ही दिनों में उन्हें पढ़कर उसका रहस्य व तात्विक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। अतः सैकड़ो वर्ष पूर्व जन–सामान्य उत्सवों व पर्वों के द्वारा ही

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़े हुए दिवसों को मनाता था और इस अवसर पर उन विद्वानों से उन घटनाओं व उन महापुरुषों की महत्ता को सुनकर व शुभ संकल्प लेकर अपने धर्म व संस्कृति को सुरक्षित करता था। इसी प्रकार से विजयादशमी का पर्व भी अस्तित्व में आया और इसने परम्परा बनकर वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा की है।

विजयादशमी पर्व के साथ कुछ धर्म विरुद्ध बाते भी जुड़ गई हैं। इस पर्व के अवसर पर मां दुर्गा एवं काली की पूजा भी की जाती है। यह दोनों देवियां शक्ति का पुंज व स्रोत मानी जाती हैं। धर्मभीरू जनता इनसे शक्ति व अपनी रक्षा की प्रार्थना करती है। विजया दशमी पर्व पर इन देवियों को पशुओं की बलि देकर प्रसन्न करने की मिथ्या व अन्धविश्वासयुक्त परम्परायें किसी समय इस पर्व के साथ जुड़ गईं। वैदिक साहित्य पढ़ने पर यह ज्ञात होता है कि ईश्वर ही हमारी माता व पिता है, वही हमारा आचार्य, राजा और न्यायाधीश भी है। वही हमें शक्ति प्रदान करता, शत्रुओं पर विजय दिलाता और हमारी रक्षा करता है। उस परमात्मा को हमें किसी प्रकार की बलि देने व कोई पदार्थ चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। वह हमारी स्तुति व प्रार्थनाओं को पसन्द करता है। हमारे द्वारा स्तुति करने से ईश्वर के गुणों का संचार हमारी आत्मा व जीवन में होता है। एक ईश्वर ही हमारा सबका उपासनीय है। उससे इतर अन्य कोई उसके स्थान पर अन्य देवता उपासनीय नहीं है। वेदों में जड़ पूजा को अकर्तव्य बताया गया है। वेदों के अनुसार जड़ व चेतन का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर ही मनुष्य विवेकी बनता है। जड़ पूजा मनुष्य को पतन की ओर ले जाती है। ऋषि दयानन्द वेदों के उच्चकोटि के विद्वान व ऋषि थे। महाभारत के बाद उनके समान वेदों का विद्वान व ऋषि विश्व में कोई अन्य नहीं हुआ। उन्होंने देश, धर्म और संस्कृति के पतन का कारण वेदों का अप्रचार, अविद्या, अन्धविश्वासों, मिथ्या परम्पराओं सहित मूर्तिपूजा तथा फलित ज्योतिष को मुख्य रूप से माना है। अतः विजया दशमी पर्व के अवसर हमें सद्ग्रन्थों वेद, दर्शन व उपनिषद सहित सत्यार्थप्रकाश आदि का स्वाध्याय करना चाहिये जो अविद्या दूर करने में सबसे सशक्त साधन हैं। इन ग्रन्थों के स्वाध्याय से अविद्या दूर होकर मनुष्य अपने कर्तव्यों से परिचित हो जाता है और ईश्वर की ही उपासना कर वह छल व प्रपंचों के द्वारा स्वार्थ सिद्ध करने वाले तथाकथित मत–मतान्तरों के आचार्यों व ठेकेदारों के शोषण व अन्यायों से बच जाता है। विजया दशमी पर हम मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन पर बाल्मीकि जी द्वारा लिखी रामायण का अध्ययन कर उनके गुणों को धारण एवं आचरण करने का संकल्प ले सकते हैं। इसके साथ ही हमें वैदिक धर्म एवं संस्कृति की विरोधी व गलत मंसूबे रखने वाली शक्तियों को जानकर उनसे सावधान रहने के लिये हर सम्भव उपाय करने चाहिये। विजया दशमी के पर्व को परिवार के साथ मिलकर मनाना चाहिये। इस अवसर पर विजया दशमी से जुड़ी प्रेरणादायक कथाओं को हम परिवार में सुन सकते हैं। इसके साथ ही एक बड़ा अग्निहोत्र यज्ञ करके ईश्वर की सहायता व आशीर्वाद भी प्राप्त कर सकते हैं जिससे हमारे धर्म की रक्षा के साथ हमारा परिवार भी सुखी व सुरक्षित रहे। अतः विजया दशमी के अवसर पर अग्निहोत्र सभी परिवारों में अवश्य होना चाहिये।

विश्व पर दृष्टि डालें तो इटली के

पन्द्रहवीं शताब्दी के कूटनीतिज्ञ मेकावेली ने अपने देश के सीजर बोर्जिया को आदर्श पुरुष बताया था। इसके कई शताब्दियों बाद जर्मन दार्शर्निक निट्शे हुआ। इसने भी सीजर बोर्जिया को आदर्श माना। इसके साथ ही निट्शे ने नेपोलियम को भी संसार का आदर्श पुरुष बताया। इन दोनों व्यक्तियों के जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो पता चलता है कि ये विवेक शून्य होकर मानवता विरोधी कामों को करने वाले व्यक्ति थे। पं0 भवानी प्रसाद जी ने सीजर बोर्जिया और नैपोलियम का उल्लेख कर कहा है कि इन दोनों में आकाश, पाताल का अन्तर है। नैपोलियम के प्रतिभावान् योद्धा होने में कोई संदेह नहीं किया जा सकता परन्तु सीजर बोर्जिया अपने समय का सब से अधिक घृणित और पतित व्यक्ति था। उसने अपने भाई को मरवा दिया था। एक महिला का सतीत्व नष्ट किया था और अपनी माता के अपमान का बदला लेने के लिए निर्दोष स्विस जनता को तलवार के घाट उतार दिया था। वह विष की उपयोगिता में विश्वास रखता था और अपने शत्रुओं पर विजय पाने की चिन्ता में उचित और अनुचित का ध्यान रखना आवश्यक न समझता था। नेपोलियम के जीवन की भी राम के जीवन से कोई तुलना नहीं है। जो आदर्श राम ने प्रस्तुत किया वह संसार के किसी महापुरुष कहे जाने वाले व्यक्ति ने नहीं किया। राम ने बाली का वध इस लिये किया क्योंकि उसने अपने छोटे भाई की धर्मपत्नी का अपहरण किया था। उन्होंने रावण से युद्ध उसके राज्य को हड़पने के लिये नहीं अपितु अपनी धर्मपत्नी सीता जी को रावण के कुत्सित इरादों व दासत्व से मुक्त कराने के लिये किया था। राम ने मानवता के पुजारी ऋषियों की रक्षा के लिये राक्षसों को चुन चुन कर समाप्त किया। उन्होंने अपना कोई निजी प्रयोजन सिद्ध नहीं किया। यह कार्य धर्म की रक्षार्थ किया गया कार्य था। इसलिये राम विश्व वरेण्य हैं। उनको आदर्श मानकर अनुकरण करने से विश्व के सभी लोगों का कल्याण होना सम्भव व निश्चित है।

विजया दशमी का पर्व चार माह की वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर मनाया जाता है। प्राचीन काल में भारत में न तो अच्छी सड़कें थी और न आजकल की तरह के यातायात के साधन। अतः वर्षा ऋतु के चार महीनों में क्षत्रियों की विजय यात्रायें एवं वैश्यों की व्यापार यात्रायें व कार्य अवरुद्ध रहते थे। वर्षा की समाप्ति पर क्षत्रिय व वैश्य अपने अपने कार्यों को पुनः आरम्भ करने के लिये अस्त्र शस्त्रों को संचालन के लिये तैयार करते थे तथा वैश्य भी अपने अपने उद्योगों व व्यापार के लिये यात्रायें आरम्भ कर देते थे। सभी देशवासी इस अवसर पर मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन से प्रेरणा लेने के लिये विजया दशमी पर्व को हर्षोल्लास से मनाते थे। कालान्तर में रावण के पुतले को जलाने की परम्परा भी इस पर्व के साथ जुड़ गई। यह उन दिनों के अनुसार किसी सीमा तक उचित हो सकता है परन्तु आज के समय में ऐसे कार्य से कोई विशेष प्रेरणा व लाभ नहीं होता। श्री राम जी के इतिहास पर दृष्टि डालने से इस दिन रावण का वध व उस पर विजय का होना सिद्ध नहीं होता। इस पर भी हम श्री राम को याद करने की परम्परा का निर्वहन करते हैं तो इसमें कुछ बुरा भी नहीं है। आज भी हमारा समाज अशिक्षित है। शिक्षित लोग भी अंग्रेजी पढ़कर राम के महत्व को समझते नहीं है। अतः अशिक्षितों सहित सभी लोग यदि इस पर्व को किसी भी रूप में मनाते हैं तो मनायें परन्तु हमारा कर्तव्य है कि हम आर्य जाति को अन्धविश्वासों एवं मिथ्या परम्पराओं से पृथक कर उसे वेद की मान्यताओं एवं सिद्धान्तों पर आरूढ़ करे। यही सबके हित में है।

यम-नियम

-आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार

यम

अहिंसासत्यासतेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः ।। योग० २।३०

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, ये पांच यम हैं। यम ये इसलिए कहलाते हैं कि ये साधक को जीवन में ऊँचा उठने के लिए हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार आदि से उपरत करते हैं, रोकते हैं, पृथक् करते हैं, हटाते हैं। अब क्रमशः इनका वर्णन किया जाता है-

अहिंसा

अहिंसा- सब प्रकार से, सब समयों में, सब प्राणियों के साथ मन से भी द्रोह छोड़कर, वैर त्याग कर प्रीतिपूर्वक वर्तना अहिंसा कहलाती है। इस अहिंसा से अगले जो शेष सत्य, अस्तेय आदि यम और शौच-सन्तोष आदि नियम हैं। वे सब अहिंसामूलक ही हैं वे सब उस अहिंसा की सिद्धि के लिए ही प्रतिपादित किये जाते हैं, वे सब उस अहिंसा को निर्मल रूप प्रदान करने के लिए ही ग्रहण किये जाते हैं, जीवन में अपनाए जाते हैं। जैसे कि पंचशिखाचार्य ने कहा है-"यह ब्राह्मण जैसे-जैसे बहुत से व्रतों (सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि और शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय आदि नियमों) को धारण करता जाता है, वैसे-वैसे वह प्रमाद से किये हुए हिंसा आदि के कारण रूप लोभ, क्रोध और मोह आदि रूप पापों से निवृत्त होता हुआ, पृथक् होता हुआ, बचता हुआ उसी विशुद्धरूप, निर्मलरूप, स्वच्छरूप अहिंसा का पालन करता है।

सत्य

यमों में यह दूसरा यम है। सत्य जो मनुष्य के मन में है, वही वाणी में हो। मनुष्य ने जैसे देखा हो, जैसा सुना हो, अर्थात् जैसा चक्षु, श्रोत्र आदि इन्द्रियों से साक्षात् किया हो, अनुभव किया हो, जैसा अनुमान किया हो, वैसा ही वाणी से बोले और मन में धारण करें। दूसरे मनुष्य में जब वह अपना ज्ञान-बोध संक्रान्त करे, दूसरे मनुष्य में जब वह अपने ज्ञान को पहुँचाए तो उस समय जो वाणी वह बोले उस में किसी भी प्रकार का छल, कपट व धोखाधड़ी नहीं होनी चाहिए, उस में कोई भ्रम, भ्रान्ति उत्पन्न करने वाली बात नहीं होनी चाहिए, उद्देश्य से उल्टी व निरर्थक बात नहीं होनी चाहिए। वह वाणी जो बोली जाए वह सब प्राणियों के उपकार के लिए ही प्रवृत्त हुई होनी चाहिए, प्राणियों के उपघात के लिए नहीं, प्राणियों के हनन के लिए नहीं। यदि इस की कही हुई वाणी इन प्राणियों के उपघात के लिए, प्राणियों के विनाश के लिए हो तो फिर वह सत्य नहीं है, वह तो फिर पाप ही है। उस पुण्यरूप प्रतीत होने वाली पापरूप वाणी से तो मनुष्य बहुत बड़े कष्टों को ही प्राप्त होता है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह अच्छी प्रकार से परीक्षा करके, अच्छी प्रकार से सोच-विचार करके सब प्राणियों का हित जिससे होता हो, सब प्राणियों का भला जिससे होता हो, ऐसा सत्य बोले। इस प्रकार का सर्वोपकारी,

सर्वहितकारी सत्य ही वास्तव में अहिंसा के स्वरूप को निखार कर मनुष्य को अहिंसक बना देता है। तभी कहा गया है कि सत्य, अस्तेय आदि यम और शौच–सन्तोष आदि नियम साधक की इस अहिंसा को ही अवदात रूप प्रदान करने वाले हैं।

अस्तेय

स्तेय कहते हैं चोरी को, परस्वापहरण को, दूसरे के धन–धान्य के अपहरण को। शास्त्रवर्जित रीति से बिना पूछे दूसरे के द्रव्यों को, पदार्थों को जो उठा लिया जाता है, अपने काम में लिया जाता है, उसे स्तेय कहते हैं, चोरी कहते हैं। ऐसे उस स्तेय का, ऐसी उस चोरी का जिस में आभाव हो उसे ''अस्तेय'' कहते हैं। और यह अस्तेय यहां तक ही नहीं है कि हम शास्त्र की आज्ञा के अनुसार किसी दूसरे के धन–धान्य के अपहरण करने से अपने आप को बचा लेते हैं। व्यास जी लिखते हैं कि– ''हम वास्तव में ''अस्तेय'' के सच्चे पालन वाले तब कहला सकेंगे जब कि हम अपने आप को इतना ऊपर उठा लेंगे कि हमारे हृदय में भी दूसरों के धन–धान्यों को, दूसरों की वस्तु, व्यक्ति व स्थानों को स्पृहापूर्वक देखने, ललचाई दृष्टि से निहारने व ललचाई दृष्टि से उपभोग करने की भावना ही नहीं रहेगी।

जो भी योगी जन इस अस्तेय का पालन करते हैं उनका जीवन फिर एक ऐसी खुली पुस्तक बन जाता है कि फिर उसमें कोई दुराव–छिपाव नहीं रह पाता। हम सामान्य जन यदि कोई खाने की वस्तु बच्चे को अनुकूल नहीं होती, माफिक नहीं होती तो हम उस को फिर बच्चों से छिपा कर खाते हैं। ऐसे ही कोई एक वस्तु हम किसी एक को देना चाहते हैं और दूसरों को नहीं तो फिर जिस को देते हैं तो वह छिपा कर देते हैं, कोई खाद्य पदार्थ एक को खिलाना चाहते हैं दूसरों को नहीं तो फिर जिस को हम खिलाते हैं उसे छिपा कर खिलाते हैं। ऐसे ही हम किसी का हित, उपकार करना चाहते हैं और किसी के प्रति उदासीन रहना चाहते हैं तो भी जिनका हित उपकार करते हैं वह गुप्त रूप से करते हैं। यह सब स्तेय कर्म हम प्रायः सदा करते रहते हैं। पर इस मार्ग का जो सच्चा अनुयायी है वह यह सब कुछ करने से हृदय से बचने का पूर्ण प्रयास करता है। क्योंकि वह इन सब छोटी–छोटी बातों में भी स्तेय, चोरी का अनुभव करता है।

इस प्रकार जो हृदय से इस अस्तेय को अपना लेता है उससे फिर किसी को कोई गिला शिकवा नहीं रहता, फिर किसी को कोई दुःख, कष्ट व हानि नहीं होती। इस प्रकार का अस्तेय रूप यह यम अहिंसा के रूप को ऐसा निखार देता है कि फिर वह साधक सब के लिए हार्दिक श्रद्धा और सम्मान का पात्र बनता है, अन्यथा घर–परिवार छोड़कर भी साधु–संन्यासी होकर भी, विरक्त आश्रमों में रह–रह कर भी कई इस स्तेय वृत्ति के कारण किसी के अत्यन्त प्रिय, श्रद्धास्पद और किसी के अत्यन्त अप्रिय अश्रद्धास्पद के स्नेह व घृणा के, मान और अपमान के, सत्कार और तिरस्कार के भाजन बन जाते हैं। अतः सच्चे साधक इस विषय में सदा सतर्क रहते हैं।

क्रमशः

हनुमान जी का लंका प्रवेश

—ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी

भयानक महासागर को तर कर, हनुमान् बिना किसी प्रकार के श्रम के लंका को देखने लगे!

फिर सोचने लगे अहो! इतनी सुरक्षित नगरी में मैं किस प्रकार प्रवेश कर सकता हूँ और बिना अन्दर प्रवेश किये सीता का सन्देश कैसे ला सकता हूँ? अतः कोई ऐसा उपाय होना चाहिए कि जिससे बिना राक्षसेन्द्र रावण को सूचना मिले, मैं सीता से मिल सकूँ अन्यथा यदि दुष्ट को कहीं पता लग गया, तो वानरों का मुझ पर भरोसा, मेरा समुद्र पार करना तथा राम का शुभचिन्तन सब व्यर्थ हो जाएगा।

परन्तु ऐसा क्यों कर हो सकता है, जब कि राक्षसेन्द्र की आज्ञा बिना यहाँ वायु भी प्रवेश नहीं कर सकती, और न उसके भीमकाय कर्मचारी गुप्तचर राक्षसों के ज्ञान से परे कोई चिरकाल तक ठहर ही सकता है। इसी प्रकार के संकल्प—विकल्प करते हुए हनुमान को वहीं शाम हो गई तो हनुमान ने रात्रि के समय मदान्ध राक्षसों के मार्गों को त्याग कर किसी छुपे हुए मार्ग से उलांघ कर लंकापुरी में प्रवेश किया—

प्रदोष काले हनुमांस्तुर्णमुत्पत्य वीर्यवान्।
प्रविवेश पुरीं रम्यां प्रविभक्तसहापथाम्।। सु0 २।४८

लंका समागम—रात्रि के समय जब हनुमान लंकापुरी में प्रविष्ट हुए, तब वह उसकी दृढ़ता, ऐश्वर्य और विलक्षण रचना को देखकर पहिले तो प्रसन्न हुए, पर जब उन्हें यह विचार हुआ कि इसकी दृढ़ता और सुरक्षा हमारे कार्य में भारी विघ्नकारक है, तो किंचित् दुःखी भी हुए क्योंकि वह जानते थे, कि यहाँ राम और उसके अनुयायियों का आना कठिन है। हनुमान् अभी उधेड़—बुन में ही थे कि इतने में उन्हें वीर वेष में शस्त्र—अस्त्रों से सज्जित एक वीरांगना स्त्री मिली। इस स्त्री का नाम लंका था तथा इसके बुद्धि, बल और वीरोचित साहस को देखकर रावण ने इसे बहुविधि सेना धनादि देकर लंका की रक्षा के लिये नियुक्त कर रखा था।

इसके कुछ काल के प्रबन्ध से ही सर्व साधारण को निश्चय हो गया था, कि जब तक लंकापुरी की रक्षा ''लंका'' कर रही है, तब तक लंकापुरी की पराजय कठिन है।

हनुमान को देखते ही लंका ने कई प्रकार के कटु शब्द कहे और उसे ताड़ना आरम्भ किया—लंका के इस दुःसाहस को देख कर पहले तो हनुमान जी ने स्त्री समझकर हाथ उठाने में संकोच किया, परन्तु जब उसकी धृष्टता बढ़ती देखी, तब इन्होंने बिना शस्त्र उठाये ही उसको तिरस्कृत कर दिया। जब वह भूमि पर गिर कर आर्त्तस्वर करने लगी, तब तत्क्षण वीर हनुमान् ने उस पर कृपा की तथा उस पर और किसी प्रकार का प्रहार करना त्याग दिया—

ततस्तु हनुतान्वोरस्तां दृष्ट्वा विनिपातताम्।
कृपां चकार तेजस्वी मन्यमानः स्त्रियं च ताम्।। सु0 ३।४२

हनुमान् की कृपा से कृतार्थ हुई वह बोली, हे महाबाहो! प्रसन्न होकर मेरी रक्षा कीजिये। हे सौम्य! समय–समय पर सब बली होते हैं। अब निश्चय जानिये कि आपकी मनोकामना पूरी होगी क्योंकि मेरे जीतने से आपने मुझ एक स्त्री को ही नहीं जीता किन्तु सारी लंका को ही जीत लिया है। सच पूछिये तो सीता के निमित्त अब दुरात्मा रावण का और अन्य सब राक्षसों के नाश का समय आ गया है। अतः हे महावीर! तू स्वेच्छापूर्वक लंका के स्थान–स्थान में विचर और जो तेरा कार्य है उसको निश्चिन्त होकर कर।

लंका भ्रमण एवं बल निरीक्षण

''लंका'' का अभिमान दूर कर हनुमान् लंकापुरी के अन्दर के भाग में चले गये, जहाँ राजा व राजकर्मचारियों के निज के भवन थे। फिरते–फिरते इन्होंने बहुत से स्वाध्याय में लगे राक्षसों को देखा तथा अनेकों को मन्त्र पढ़ते व रावण की स्तुति के गीत गाते सुना तथा कई स्थानों में अग्निकुण्ड और अग्निहोत्र के साधनों को देखा। आगे चलकर लंकापति रावण का भवन भी देखा। इसके चारों ओर शस्त्र अस्त्रों के धारण करने वाले, नीति–निपुण, कृतज्ञ अनेक वीर योद्धा खड़े हुए थे और वह मन्दिर पर्वत के शिखर पर अपनी कान्ति से आकाशस्थ नक्षत्रों की भांति चमकता था। उसके इर्द–गिर्द अनेक हाथी घोड़े रथ और विमान खड़े थे।

इसी प्रकार भ्रमण करते हुए हनुमान् ने रावण और उसके प्रधान पुरुषों का बल देखने के लिये महोदर, विरूपाक्ष, विद्युज्जिह्व, विद्युन्मानी, बहुदंष्ट्र, शुक, सारण, इन्द्रजीत, जम्मुमालि, सुमालि, रश्मिकेतु, सूर्यशत्रु, बज्रकाय, धूम्राक्ष, संपाति, विद्युद्रपभीम, घन, विघन, शुकनाम, चक्र, शठ, कपट, हस्वकर्ण, दंष्ट्र, लोमश, मत्त, ध्वजग्रीव सादिन, वियुज्जिह्व, द्विजिह्व, हतिमुख, कराल, विशाल, शोणिताक्ष आदि के भवनों को भी देखा, जिससे उन्होंने लंका के बल का निरीक्षण कर लिया। इसी भांति हनुमान् ने–

शिविका विविधाकाराः स कपिर्मारुतात्मजः।
लतागृहाणि चित्राणि चित्रालागृहाणि च।। सु0 ६।३६

क्रीड़ागृहाणि चान्यानि दारूपर्वतकानि च।
कामस्य गृहकं रम्यं दिवागृहकमेव च।। सु0 ६।३७

दादर्श राक्षसेन्द्रस्य रावणस्य निबेशने।
समंदर समप्रख्यं मयूरस्थानसंकुलम्।। सु0 ६।६८

रावण के चित्रशाला गृह, लतागृह नाना विधि शिविका, क्रीड़ा भवन, दारू पर्वत, कामगृह और दिवागृह को भी देखा, जिससे लंका के विज्ञानी व शिल्पी लोगों के बुद्धिबल का पता लग गया।

इन सबके देखने से हनुमान् को रावण की बहुत सी रीति–नीति का पता लग गया, जिसका फल आगामी युद्ध में बहुत ही हितकर हुआ।

रावण–भवन में सीता का भ्रम

सब स्थानों को देखकर, एक दिन पुनः हनुमान् ने रावण के पुष्पक विमानादि को चढ़ कर देखा तथा स्त्री–मण्डल को देखते–देखते उन्होंने एक गौर वर्ण, सुवर्ण भूषणों से भूषित, अन्तःपुर की ईश्वरीय और सर्वथा मनोहर अंगो वाली स्त्री को आनन्द में सोये हुए देखा जिसे देख विचार किया, कि यह रूप यौवन सम्पन्न स्त्री सीता ही होगी–

स ताँ दृष्ट्वा महाबाहुर्भूशिताँ मारुतात्मजः।
तर्कयामास सीतेति रूप्यौवन सम्पदा।। सु0 10।53

फिर उन्होंने सोचा कि राम से वियुक्त सीता इस प्रकार निश्चिन्त होकर सो नहीं सकती और न वह इस प्रकार भोग ही भोग सकती हैं। वह अलंकार धारण नहीं कर सकती और दूसरे पुरुष को तो क्या वह देवराज इन्द्र को भी सेवन नहीं कर सकती, क्योंकि राम के समान गुणवान् तथा निर्दोष पुरुष अन्य कोई नहीं हो सकता। इसलिए यह कोई अन्य स्त्री है। मुझे सीता को समाचार और स्थान से लेना चाहिए। यह विचार कर हनुमान् पान भूमि की ओर चले गये–

न रामेण वियुक्ता सा स्वप्तुमर्हति भामिनी।
न भोक्तुं नाप्यलंकर्तुन पानमुपवितुम।। सु0 11।2

नान्यं नरमुपस्थातु सुराणमपि चेश्वरम्।
नहि रामसमः काश्विद्विद्यते त्रिदशेश्वपि।। सु0 11।3

अन्येयमिति निश्चित्य भूयस्तत्र चचार सः।
पानभूमौ हरिश्रेष्ठः सीतासं दर्शनोत्सूकः।। सु0 11।4

महावीर की धर्म–भीरुता : मनः शुद्धता

पान भूमि में सीता को देखते हुए हनुमान् ने एक दिन बहुत सी रूप यौवन तथा धन मद से मदान्ध रमणियों को रावण से रमण करते देखा किन्तु जानकी को न देखा। तब उन्हें बड़ी चिन्ता हुई और वह सोचने लगे कि–

परदारावरोधस्य प्रसूप्तस्य निरीक्षणम्।
इदं खलु ममात्यर्थ धर्मलोप करिश्यति।। सु०11।38

नहि से परदाराणां तृष्टिविषयवर्तिनी।
अयं चात्र मया दृष्टः परदारपरिग्रहः।। सु० 11।36

दुःख की बात है कि मुझे सीता देवी का तो पता नहीं चला किन्तु अन्य कई प्रकार के धर्म लोप वाले, शास्त्र–निषिद्ध कर्म सामने दिखाई पड़ते हैं, जो एक धर्मात्मा धर्म–भीरु पुरुष को भी धर्म से शिथिल कर देते हैं। यद्यपि मेरी दृष्टि परस्त्री विषय में दूषित नहीं, तथापि मैंने परस्त्रियों को ऐसी दशा में अवश्य देखा है, जिसका देखना शास्त्र में निषिद्ध है।

इस विचार के साथ ही हनुमान के हृदय में उस राजाज्ञा रूपी धर्म के नाश होने का भय उत्पन्न हुआ, जिसके लिये वह समुद्र लाँघ कर इतनी दूर आये थे। तब उन्होंने दूत–धर्म और मनुष्य–धर्म की तुलना करते हुए विचारा कि–

कामं पृष्ठाः मया सर्वा वश्वस्ता रावणास्त्रय।
न तु मे मनसा किंचद्वैकृत्यमुपपद्यते। सु० 11।41

मनो हि हेतुः सर्वेशामिन्द्रियाणां प्रवर्त्तने।
शुभाशुभास्ववस्थासु त्व मे सुव्यवस्थितम्।। सु० 11।42

नान्यत्र हि मया भाक्या वदेही परिमार्गितुम्।
स्त्रियोहि स्त्रिशु दृश्यन्ते सदा संपरिमार्गणे।। सु० 11।43

यस्य सत्वस्य या योनिस्तस्यां तत्परि मार्गते।
न शक्यं प्रमदा नष्टा मृगीशु परिमार्गितुम्।। सु० 11।44

तदिदं मार्गितं तावच्छुद्धेन मनसा मया।
रावणान्तःपुरं सर्व दृश्यते न च जानकी।। सु० 11।45

यद्यपि मैंने सब दिशाओं में सत्रियों को देखा है, परन्तु मेरे मन में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न नहीं हुआ। मन ही सब इन्द्रियों को शुभ व अशुभ कर्मों में प्रवृत्त कराने वाला है और वही मेरा मन व्यवस्था में हैं। फिर स्त्री–मण्डल के अतिरिक्त दूसरी जगह मिलेगी ही नहीं क्योंकि स्त्रियाँ सदा स्त्रियों में ही देखी जाती हैं। जिस जाति का जो पदार्थ होता है वह उसी जाति में पाया जाता है। स्त्री खो जाने पर हरिणों की पंक्तियां नहीं ढूंढी जाती। इसलिये शुद्ध मन से रावण के अन्तःपुर में ही तब तक सीता को ढूंढना चाहिए, जब तक व पा नहीं जाती।

करतार सिंह सराभा

—स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज

''मैं भारत में क्रान्ति लाने का समर्थक हूँ और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अमेरिका से यहाँ आया हूँ। यदि मुझे मृत्युदण्ड दिया जायेगा तो मैं अपने—आपको सौभाग्यशाली समझूँगा क्योंकि पुनर्जन्म के सिद्धान्त के अनुसार मेरा जन्म फिर से भारत में होगा और मैं मातृभुमि की स्वतंत्रता के लिये काम कर सकूंगा।''—सराभा (अदालत में मुकदमे के दौरान बयान)

लुधियाना से 25 किलोमीटर दूर ''सराभा'' गाँव में 24 मई 1896 को जन्म हुआ। करतार सिंह के पिता का नाम सरदार मंगल सिंह तथा माता का नाम साहिब कौर था। इनके पिता की मृत्यु अल्पायु में ही हो गई थी अतः इनके दादा बदन सिंह ने इनका पालन—पोषण किया। करतार के एक चाचा यूपी पुलिस में इन्सपैक्टर थे और दूसरे उडीसा में वन विभाग में अधिकारी थे। करतार की प्रारम्भिक शिक्षा गांव में हुई। फिर इन्होंने लुधियाना के मालवा खालसा हाईस्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की। जब ये दसवीं कक्षा में थे तो इनके परिवार वालों ने इन्हें इनके चाचा के पास उडीसा भेज दिया। वहां इन्होंने रेवनशां कालेज से ग्यारवीं पास की। उडीसा उन दिनों बंगाल प्रान्त का हिस्सा हुआ करता था (बिहार व उडीसा को बंगाल से 1912 में अलग किया गया था) तथा राजनीतिक रूप से जागृत अवस्था में था। पंद्रह वर्ष की अवस्था में घरवालों ने करतार को शिक्षा तथा नौकरी के लिये अमेरिका भेज दिया। 01 जनवरी 1912 को सराभा पानी के जहाज से ''सान फ्रांसिस्को पहुंचे। इनके गांव का एक व्यक्ति रुलिया सिंह 1908 से अमेरिका में एस्टोरिया में रह रहा था। अमेरिकी आव्रजन अधिकारियों द्वारा अमेरिका आने का कारण पूछने पर सराभा ने उच्च शिक्षा अपना उद्देश्य बताया। वहाँ इन्होंने देखा कि भारतीयों से घण्टों पूछताछ की जाती है तथा ज्यादा सख्ती से तलाशी ली जाती है जबकि अन्य क्षेत्रों से आये लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार किया जाता है। जब सराभा ने अपने एक साथी से इसका कारण पूछा तो उसने कहा कि हम भारतीय एक गुलाम देश के नागरिक हैं इसलिये हमें ऐसा व्यवहार सहना पडता है। सराभा पर इन घटनाओं का बड़ा असर पड़ा। अमेरिका आने के कुछ दिनों बाद इन्होंने एक कारखाने में काम शुरु कर दिया तथा रुलिया सिंह के साथ एस्टोरिया में रहने लगे।

उन दिनों पांच हजार से अधिक भारतीय अमेरिका के तटीय क्षेत्रों में मजदूरी करते थे। कनाडा में तेजा सिंह तथा अमेरिका में ज्वाला सिंह भारतीय मजदूरों के अधिकारों की रक्षा के लिये संघर्ष कर रहे थे। ज्वाला सिंह की सलाह पर सराभा ने बर्कले में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान की स्नातक कक्षाओं में दाखिला ले लिया तथा खर्च चलाने के लिये बगीचों में फल तोडने का काम करने

लगे। जब ये एक बुजुर्ग महिला के यहाँ किरायेदार थे तो इन्होंने देखा कि वो महिला कुछ फोटो दीवार पर सजा रही है। पूछने पर उसने बताया कि आज हमारा स्वतंत्रता दिवस चार जुलाई है और हम अपने स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मान दे रहे हैं। उस समय तारकनाथ दास व गुरुदत्त कुमार अमेरिका में बसे भारतीयों में एकता व देशप्रेम जगाने के लिये अखबार निकाला करते थे। तभी दिसम्बर 1912 में लाला हरदयाल ने अमेरिका में ओजपूर्ण भाषण देने शुरु किये। 25 मार्च 1913 को ओरेगॉन में एक ऐसी ही सभा में लाला हरदयाल ने श्रोताओं से पूछा कि उनमें से कौन भारत के लिये अपने प्राण त्यागने को तैयार है। करतार उठकर आगे बढ़े और लाला हरदयाल ने उन्हें गले लगा लिया। अगले सप्ताह 02 अप्रैल 1913 को कैलिफोर्निया में गदर पार्टी का गठन किया गया। 01 नवम्बर 1913 से पार्टी का मुखपत्र ''गदर की गूंज'' छह भाषाओं में छपना शुरु हुआ। इसके सम्पादन का भार सराभा के हाथों में आ गया। इस अखबार में खुले तौर पर ब्रिटिश सरकार के प्रति भारतीयों को क्रान्ति के लिये प्रेरित किया जाता था। 05 अगस्त 1914 को इसमें ''युद्ध का निर्णय'' छापा गया। गदर आंदोलनकारी सेना को सशस्त्र विद्रोह के लिये प्रेरित करने लगे। भारत में बाघा जतिन, सचिन सान्याल तथा रासबिहारी बोस तथा जर्मनी में विरेन्द्र चट्टोपाध्याय, बरकतुल्ला, राजा महेन्द्रप्रताप एक दूसरे के सम्पर्क में थे। नवम्बर 1914 में सराभा, सत्येन सेन तथा विष्णु गणेश पिंगले ''एस.एस. सलामीन'' नामक जलपोत में सवार होकर कोलम्बो के रास्ते कलकत्ता पहुँचे तथा बाघा जतिन के निर्देश पर रासबिहारी बोस से मिले। सराभा ने रासबिहारी बोस को 20000 क्रान्तिकारियों के तैयार होने की सूचना दी। ब्रिटिश सरकार को अपने गुप्तचरों के माध्यम से इस योजना का पता चल गया तथा सैकड़ों गिरफ्तारियां हुई। पुलिस से बचते हुए सराभा ने लाढोंवाल (लुधियाना) में एक बगीचे में सभा की। 25 जनवरी 1915 को रासबिहारी बोस अमृतसर पहुँचे तथा 12 फरवरी को हुई गुप्त बैठक में 21 फरवरी का दिन सशस्त्र क्रान्ति के लिये तय किया गया। यह योजना बनाई गई कि मियांमीर और फिरोजपुर की छावनियों को कब्जाने के बाद दिल्ली व अम्बाला में विद्रोह के प्रयास किये जाए। पर एक गद्दार कृपाल सिंह ने सारी योजना ब्रिटिश सुरक्षा अधिकारियों को बता दी। 19 फरवरी 1915 को व्यापक स्तर पर बंगाल, यूपी व पंजाब में गिरफ्तारियां हुई। तथा कई सैनिक छावनियों में भारतीय सैनिकों के हथियार जमा करवा लिये गये।

क्रान्ति की विफलता के बाद रासबिहारी बोस ने सराभा को अफगानिस्तान के रास्ते वापस अमेरिका या यूरोप जाने की सलाह दी। वजीराबाद क्षेत्र में भारतीय सीमा के पास पहुंचने पर सराभा, हरनाम सिंह तुंडीलत और जगत सिंह ने फैसला किया कि इस तरह विदेश भागना कायरता होगी तथा क्रान्ति का खुला संदेश देकर गिरफ्तार होना बेहतर विकल्प है। 02 मार्च 1915 को तीनों वापस आये और सरगोधा के चक संख्या 5 में सैनिक छावनी के पास सैनिकों को ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध विद्रोह के लिये भाषण देने लगे।

रिसालदार गेंदा सिंह ने इन्हें व साथियों को गिरफ्तार कर लिया।

सराभा व अन्य कैदियों पर राजद्रोह का अभियोग लगाया गया तथा लाहौर में 63 गदर क्रान्तिकारियों को 13 सितम्बर 1915 को सजा सुनाई गई। इनमें से 4 को फाँसी दी गई। करतार सिंह सराभा इनमें से एक थे। जब इस सजा के विरूद्ध अपील की गई तो इनमें से सात की सजा बरकरार रही। सराभा के मुकदमे में जज ने कहा–''इस युवक ने अमेरिका से लेकर हिन्दुस्तान तब अंग्रेज शासन को उलटने का प्रयास किया। इसे जब और जहाँ भी अवसर मिला, अंग्रेजों को हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया। इसकी अवस्था बहुत कम है परन्तु यह अंग्रेजी शासन के लिये बड़ा भयानक है''।

करतार सिंह सराभा हँसते–हँसते 16 नवम्बर 1915 को फाँसी के फन्दे पर झूल गये। भाई परमानन्द के अनुसार सिपाही इनसे इतना डरते थे कि इन्हें कोठरी में भी बेडियों में रखा जाता था। बाद में भगत सिंह ने इस क्रान्तिवीर से प्रेरणा ली। वे सदा सराभा का फोटो अपनी जेब में रखते तथा नौजवान भारत सभा के कार्यकर्ताओं को इनके फोटो के स्लाइड शो दिखाते। कई मायनों में सराभा को भगत सिंह अपना गुरू मानते थे।

गुरु पूर्णिमा पर गुरु की पहचान

पं० वेद प्रकाश शास्त्री

1. गुरु जो ढूंढन मैं चला, सद्गुरु मिना न कोय।
अर्थ संचय में सभी लगे, त्याग करे नहिं कोय।।

2. गुरु भया तो क्या भया, धन के भर लिए भंडार।
परोपकार कुछ करे नहीं, कहता नश्वर संसार।।

3. नामदान हम करें नित, करो तुम बहुत धनदान।
पापमुक्त हो जाओगे, गुरु का यह वरदान।।

4. शिष्य चाहते बिन श्रम के, नित होवे अति कल्याण।
गुरु कहें नित करते रहो, तन–मन–धन का दान।।

5. शिष्य त्याग का पाठ पढें, गुरु करें विविध व्यापार।
आश्रम सुख सुविधा से भरे, कैसे होंगे भव से पार।।

6. वेद पढ़े न शास्त्र को, कान में फूंकें गुरुमन्त्र।
इसी में है कल्याण तुम्हारा, मुक्ति होय तुरन्त।।

7. योग कहें योगासन करें, देखो गुरु का संसार।
धन विदेश नहि जात है, देशहित करते व्यापार।।

8. देखो त्यागियों के महल, ब्रह्मचारियों की सन्तान।
हो रहा शोर मौनियों में, सब देख रहे हैरान।।

9. त्यागी, तपस्वी और मनस्वी, हो वेदों का विद्वान्।
निर्मल चरित्र बनाए शिष्य का, सद्गुरु उसी को जान।।

महर्षि देव दयानन्द के जीवन की कुछ विविध घटनाएँ

—खुशहाल सिंह आर्य जी

महर्षि देवदयानन्द का जीवन विविध घटनाओं से भरा पड़ा हैं जिनमें कुछ घटनाएँ हम इस लेख में प्रस्तुत करते हैं :

1. **ब्रह्मचर्य का अद्‌भुत बल**—यह सन 1877 की जालन्धर की घटना है। एक दिन सरदार विक्रम सिंह ने स्वामी जी के समक्ष अपनी शंका व्यक्त की और बोले ''भगवन'' ऐसा कहा जाता है कि ब्रह्मचर्य से व्यक्ति महाबली हो जाता है। क्या यह कथन सत्य है? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि शास्त्रों ने ब्रह्मचर्य की जो महिमा बखानी है, वह सर्वथा सत्य है। इस पर सरदार जी बोले आप भी तो ब्रह्मचारी हैं, हमें तो आप में कोई बल दिखाई नहीं देता। स्वामी जी ने उनको इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

सरदार जी जब सत्संग की समाप्ति पर अपने दो घोड़ों की गाड़ी में आरुढ़ हुए तो स्वामी जी ने पीछे से पकड़ लिया। विक्रम सिंह बार—बार घोड़ों को चाबुक लगाते रहे। किन्तु घोडे केवल हिनहिनाते रहे। परन्तु आगे नहीं बढ़े। तब सरदार जी ने अपनी दृष्टि पीछे घुमाई तो देखा कि स्वामी जी गाड़ी को पकड़े खड़े हैं। स्वामी जी ने गाड़ी को छोड़ दिया तो वह आगे बढ़ी। इस प्रकार सरदार विक्रम सिंह पर स्वामी जी के ब्रह्मचर्य बल की अमिट छाप पड़ गई।

2. **अमीचन्द का जीवन बदला**—यह 26 दिसम्बर 1877 की घटना जेहलम (पंजाब) की है। एक दिन एक व्यक्ति ने पूछा। ''महाराज! अनुमति हो तो आज मैं एक गीत सुनाऊँ?'' स्वीकृति प्राप्त होते ही उसके सुमधुरकण्ठ से गीत फूट उठा। उसकी वाणी में इतना माधुर्य था कि स्वामी जी झूम उठे। सत्संग की समाप्ति पर एक आदमी ने स्वामी जी को बताया कि ''महाराज! जिस व्यक्ति ने आज गीत गाया है, वह यहां का तहसीलदार है और इसका नाम अमीचन्द है।'' यह चरित्रहीन है और अपनी धर्मपत्नि को त्यागकर वेश्यागामी हो गया है। मांस और मद्य का भी सेवन करता है।

अगले दिन उसने स्वामी जी की स्वीकृति से पुनः एक गीत गाया। श्रोता व स्वामी जी सभी उसकी संगीत लहरी से आनन्दित हो उठे। गायन समाप्त हुआ तो स्वामी जी बोले ''अमीचन्द! तुम हो तो हीरा, किन्तु कीचड़ में पड़े हो। ''स्वामी जी के इन शब्दों से उसे विद्युत आघात सा महसूस हुआ और वह यह कहते उठकर चल दिया। ''महाराज, अब में पाप से निकलकर ही आपके दर्शन करुगाँ।'' फिर जाकर अमीचन्द ने शराब की सभी बोतलें तोड़ दी और वेश्याओं को भी स्वगृह से निष्कासित कर दिया। मांस से भी दूर रहने की धारणा कर ली और तार देकर अपनी पत्नि को वापस बुला लिया। अमीचन्द के इस जीवन परिवर्तन से जहाँ सारा नगर आश्चर्य चकित रह गया, वहाँ स्वामी जी का प्रभाव भी जन—जन में व्याप्त हो गया। यही अमीचन्द बाद में मेहता अमीचन्द के नाम से विख्यात हुए। इन्होंने अनेक भजन लिखे। इनका एक भजन ''आज सब मिल गीत गाओ, उस प्रभु को धन्यवाद।'' आज भी आर्य समाजों में बड़े प्रेम एवं श्रद्धाभक्ति से गाया जाता है।

3. **तो फिर उड़ा दो**—9 मई 1876 को स्वामी जी फर्रुखाबाद पधारे। यहाँ ईसाई पादरी

जे.जे. लूकस के साथ स्वामी जी की धर्म चर्चा हुई, ''फिर उसने प्रश्न किया'' स्वामी जी यदि आपको तोप के मुंह से बाँध कर कहा जाए कि यदि आप मूर्ति के समक्ष नतमस्तक न होंगे तो आपको तोप से उड़ा दिया जायेगा, तो आपका उत्तर क्या होगा? ''स्वामी जी ने प्रबल आत्म विश्वास का परिचय दिया और बोले उस समय मेरे मुंह से यही निकलेगा ''तो फिर उडा दो।''

4. **जहां भी रहूंगा, सत्य ही कहूंगा**—मार्च 1878 में स्वामी जी लाहौर पहुंचे। वहां उनका निवास नवाब वाजिदअली की कोठी में हुआ। यहीं स्वामी जी के व्याख्याान भी होते थे। एक दिन आपने इस्लाम की अलोचना की तो व्याख्यान के उपरान्त एक सज्जन ने आपके इस प्रवचन की यह कहते हुए अलोचना की कि ''स्वामी जी आप एक मुसलमान के घर पर ही ठहर कर उसी के मजहब की अलोचना तो न कहिए।''

महर्षि दयानन्द ने उत्तर दिया, ''मैं वैदिक धर्म के प्रचारार्थ आया हूँ। उसी का उपदेश दूंगा। मेरे यहाँ आने का प्रयोजन इस्लाम अथवा किसी अन्य मजहब की यशोगाथा गाना नही हैं। मैं तो जहां भी रहूँगा, सत्य ही कहूँगा। मुझे परमात्मा के अतिरिक्त और किसी का भी भय नहीं है।''

5. **उपदेशामृत का प्रभाव**—यह घटना जनवरी 1879 की ज्वालापुर की है। यहां के सुप्रसिद्ध मुस्लिम रईस ऐवाज खां भी स्वामी जी के उपदेशामृत का नितान्त मनोयोग सहित पान करते थे। अन्ततः श्री ऐवाज खां के जीवन में एक नवीन परिवर्तन आया और वे भी गोरक्षा के प्रबल समर्थक हो गये, तथा उन्होंने नित्य स्नान को भी अपना नियम बना लिया। इतना ही नही मांसाहार से भी उन्हें पूर्ण विरक्ति हो गई। स्वामी जी ने उक्त मुस्लिम रईस को अपने प्रबल तर्कों द्वारा आर्य सिद्धांतों के प्रति अनुरक्त बना दिया था और उसकी जीवनधारा को एक नया मोड़ दे दिया था।

6. **सत्संग में नींद आने का रहस्य**—17 अप्रैल 1878 को स्वामी जी लाहौर में पुनः पहुंच कर अपने उपदेशामृत से लोगों के जीवन को सफल करने लगे। एक दिन एक श्रद्धालू सज्जन ने स्वामी जी से प्रश्न किया, ''महाराज! नृत्य, संगीत और हास्य—परिहास्य के स्थलों पर तो लोग सारी— सारी रात जागते रहते हैं, किन्तु सत्संग और धर्मोपदेश में लोग कुछ ही समय के उपरान्त उँघने क्यों लग जाते हैं?''

महर्षि ने उसका समाधान इन शब्दों में किया, ''जिस स्थान पर प्रभु की महिमा का वर्णन हो, वह सत्संग स्थल तो सुकोमल शैया के तुल्य है, जब कि नृत्य, संगीत आदि उत्तेजक भाव आत्मा के लिए काँटों का बिछौना है। अतः यह स्वाभाविक ही है कि सत्संग स्थल रुपी सुकोमल शैया पर किसी को भी निद्रा आ जाये। काँटों के बिछौने पर भला कोई कैसे सो सकता है।

7. **देवालय तोड़ना मेरा काम नहीं**—25 सितम्बर से 8 अक्टूबर तक स्वामी जी ने फर्रुखाबाद में वेदसुधा सरसाई। उन्हीं दिनों फर्रुखाबाद की सड़कों का सर्वेक्षण चल रहा था। बाजार में सड़क पर एक छोटी सी मढ़िया थी। अनेक लोग वहाँ धूप—दीप जलाते थे। एक दिन बाबू मनमोहन लाल स्वामी जी के पास आये और बोले ''महाराज''! स्काट साहब आपको बहुत मानते हैं। यदि आप उन्हें इशारा कर दें तो मार्ग में स्थित मढ़िया, मार्ग से हट सकती है। भ्रम का स्थान दूर हो सकता है।

स्वामी जी ने उत्तर में कहा ''तिरछे और

टेढ़े मार्ग से किसी मत को हानि पहुंचाना धर्म नहीं अधर्म हैं। मुस्लिम शासकों ने सैकड़ों मन्दिरों का विध्वंस किया, किन्तु वे मूर्ति–पूजा बन्द न करा सके। हमारा काम तो मानव हृदय से मूर्तियों को निकालना है। ईंट–पत्थर के बने देवालयों को तोड़ना–फोड़ना नहीं।

इन सात घटनाओं से यह ज्ञात हो गया कि स्वामी जी कितने सत्य के उपासक थे और कितने उदार हृदय के थे। उनका वैदिक धर्म, मानव धर्म था इसीलिए वे इस धर्म का प्रचार व प्रसार करते थे।

यह लेख मैने जन–ज्ञान के जनवरी 2019 के भाग–2 ये लिया है। जिसमें पूज्या बहन राकेश रानी ने भाग–1 तथा भाग–2 मे महर्षि जी की जीवनी बड़े ही सुन्दर ढंग से लिखी है। मैं उनकी सराहना करते हुए लेख को विराम देता हूँ।

शाकाहारी बनाम मांसाहारी

शाकाहारी से लाभ	मांसाहारी के नुकसान
स्वस्थ जीवन, आरोग्यकारक	अस्वास्थ्य जीवन, रोगकारक
लम्बी जीवन, आयुवर्धक	अल्पायु, आयु क्षीणकारक
शान्त मन और चित्त	उत्तेजक मन और चित्त
सौम्य, कान्तिमय चेहरा	क्रूर, कान्तिहीन चेहरा
मधुर वाणी – वचन	कटु वाणी – वचन
परिशुद्धित पर्यावरण	प्रदूषित पर्यावरण
पीड़ामुक्त संसार	पीड़ायुक्त संसार
आतंक, हिंसा, युद्धमुक्त संसार	आतंक, हिंसा, युद्धयुक्त संसार
प्राकृतिक सन्तुलन	प्राकृतिक आपदा आमंत्रण
सुखी और शान्ती जीवन	दुःख, दुर्घटना, दुर्भिक्षपूर्ण जीवन
धन की बचत चूंकि सस्ता	धन का व्यय चूंकि महंगा
महँगाई कम – गरीबी कम	महँगाई बढ़े – गरीबी बढ़े
रोजगार वर्धक	बेरोजगार वर्धक
सुपाच्य (4 घंटे में पचे)	दुष्पाच्य (18 घंटे में पचे)
महापुण्य – महासुखदायी	महापाप – महादुःखदायी
कुशाग्र एवं सौम्य बुद्धि	राक्षसी–दानवी एवं दुष्बुद्धि

एक तेरी दरकार

—महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

एक राजा की सेना आक्रमण करती हुई दूसरे राजा के देश पर जा चढ़ी। कई दिन तक घमासान लड़ाई होती रही। खून की नदियाँ बह गई। अन्ततः आक्रमणकारी राजा ने विजय पाई। राजा विजय के बाजे बजाता हुआ दूसरे राजा के देश में प्रविष्ट हो गया। देश के प्रबन्ध और अन्य कार्यों के लिए राजा दीर्घकाल तक वहीं ठहरा रहा। जब वापसी का समय निकट आया तब उसने रानियों को प्रेम से पूर्ण पत्र लिखे और साथ ही पूछा कि कहो मैं तुम्हारे लिए इस देश से क्या—क्या भेंट लाऊँ।

रानियों ने उन पत्रों को पढ़ा और उनकी बाछें खिल गई— वे अत्यन्त प्रसन्न हो गई। रानियों ने समझा था कि राजा हमें भूल गया है, परन्तु इन पत्रों ने सारे वहम, सारे सन्देह और सारे अविश्वास मिटा डाले। प्रत्येक रानी ने पृथक—पृथक पत्र लिखा। किसी ने लिखा—''राजन्! मेरे लिए तो उस देश के ऐसे सुन्दर आभूषण लाना जिन्हें पहनकर मैं प्रसन्न हो जाऊँ।'' दूसरी ने लिखा—''प्राणपते! मेरे लिए उस ओर से उत्तम—से—उत्तम जो रेशम बनता है, उसके वस्त्र बनवाकर लाना।'' तीसरी ने लिखा—''प्राणनाथ! मेरे लिए उन सुन्दर पर्वतों के हीरे और जवाहरात लाना, जिन्हें पहनकर मैं फूली न समाऊँ।'' एक और ने लिखा—''भगवन्! उन हरे—भरे पर्वतों से कोई ऐसी बूटी लाना, जिससे मेरी गोद हरी हो जाए।'' पाँचवी ने लिखा—''राजन! मुझे तो उस देश के मीठे—मीठे और स्वादिष्ट फलों की इच्छा है। ''इसी प्रकार छठी और सातवीं ने भी लिखा।

परन्तु सबसे छोटी रानी ने एक विचित्र पर मार्मिक बात लिखी और वह यह कि एक सफेद कागज पर केवल १(एक) का अंक लिखकर भेज दिया। राजा के पास ये सारे पत्र पहुँचे। उसने स्वयं उन्हें खोला और समस्त रानियों के द्वारा इच्छित—चाही गई वस्तुओं को पढ़ा, परन्तु सबसे छोटी—रानी के पत्र का तात्पर्य कुछ न समझकर उसने मन्त्री को बुलाया और कहने लगा—

''देखो, सब रानियों ने कुछ—न—कुछ लाने के लिए लिखा है, परन्तु यह छोटी रानी कितनी मूर्ख है कि इसने केवल १(एक) का अंक लिखकर ही भेज दिया है।''

मन्त्री—राजन! यह रानी मूर्ख नहीं है, अपितु सबसे बुद्धिमती है और रानियों ने तो व्यर्थ की वस्तुएँ माँगी है, परन्तु इसके हृदय में आपके प्रति इतना प्रेम है कि वह केवल आपको चाहती है, अन्य किसी वस्तु की आवश्यकता अनुभव नहीं करती। इसके १(एक) लिखने का यही अर्थ है कि उसे केवल आपकी इच्छा है और किसी वस्तु की नहीं।

अब सब रानियों की इच्छा के अनुसार सब वस्तुएँ क्रय की गई और राजा भी अपने देश में पहुँच गया। समस्त रानियों को उनकी इच्छित–चाही हुई समस्त वस्तुएँ उन्हें भेज दीं और स्वयं सबसे छोटी रानी के पास चला गया और उसके साथ ही राजा की समस्त धन–सम्पत्ति जो उस देश से लाया था, वह भी उसी के घर चली गई।

यह एक कहानी है। इसे झूठा समझो या सच्चा, परन्तु यह कहानी हृदय को लुभाने वाली और मनोहर पाठ पढ़ाती है। यह उन लोगों की आँखें खोलती है और कान भी, जो ईश्वरभक्ति इसलिए करते हैं कि हमें धन मिल जाएगा। कोई भूमि के लिए, कोई मुकदमा जीतने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है। प्रायः लोग सांसारिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रार्थना और उपासना करते हैं। किसी को यश की इच्छा है, किसी को स्वास्थ्य की, अनेक व्यक्तियों को बडा बनने की। संक्षेप में इसप्रकार की ईश्वर की भक्ति करने वाले असंख्य हैं, जिनके हृदय में कोई–न–काई सांसारिक स्वार्थ छिपा हुआ है। ऐसे लोगों को निःसन्देह ये वस्तुएँ मिलती भी हैं, परन्तु इतनी ही मिलती है, जितनी वे माँगते हैं, इससे अधिक ईश्वरभक्ति का फल उनको नहीं मिलता, परन्तु जो सबसे छोटी रानी की भाँति केवल ईश्वरप्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं, उन्हें जहाँ ईश्वर के दर्शन होते हैं, वहाँ और भी सब वस्तुएँ मिल जाती हैं।

ईश्वर का सच्चा भक्त सोने और चाँदी के ठीकरों–रुपयों के लिए प्रार्थना नहीं करता। वह मांस का एक जीवित लोथड़ा–पुत्र या पुत्री लेने के लिए उसके आगे सिर नहीं पटकता। वह सांसारिक सुखों के लिये जो वस्तुतः दुःख हैं, अपना समय नष्ट नहीं करता, अपितु निष्काम होकर ईश्वरभक्ति करता है और वही सच्चे अर्थों में सफल होता है। जो मनुष्य ईश्वर–प्राप्ति के लिये ईश्वभक्ति करता है, उसे सब–कुछ मिलता है। अथर्ववेद में कहा है–

आयु, प्राणशक्ति, प्रजा–उत्तम सन्तान, पशुधन, कीर्ति, सम्पत्ति–धन–दौलत और ब्रह्मतेज उस भक्त के लिए हैं, जो ईश्वरभक्ति करता है।

सांसारिक वस्तुओं के लिए उपासना करना, इतने बड़े सम्राटों के सम्राट् से कुछ ठीकरियाँ माँगना और छोटी–छोटी वस्तुओं के लिए उसके सामने गिड़गिड़ाना उसका अपमान करना है और अपने जीवन को नष्ट करना है।

उपासना करो उसकी निष्काम होकर, करो भक्ति बिना इच्छा के फिर तुम देखोगे कि जहाँ तुम्हें परमानन्द मिलेगा, वहाँ संसार के सारे सुख और ऐश्वर्य भी मिल जाएँगे, क्योंकि श्रुति–वेद में ऐसी उपासना के विषय में बड़े अधिकार पूर्वक कहा है और वेदवाणी कभी भी असत्य नहीं हो सकती।

अब आर्यपुरुष बतलाएँ वे किस प्रकार की भक्ति करना पसन्द करेंगे?

टी.बी. की आयुर्वेदिक चिकित्सा

—डॉ० भगवान दास जी

टी.बी. रोग यक्ष्मा संबंधी रोगाणुओं से होता है। मुख्य रूप से यह रोग फेफड़ों को प्रभावित करता है। जबकि हड्डियां, लसिका ग्रंथियां और आंतें भी इस रोग का शिकार हो सकती हैं। आयुर्वेद में इस रोग को राजयक्ष्मा कहा जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है—रोगों का राजा।

आयुर्वेद में भी रोगाणुओं को इस रोग का कारण माना जाता है। परंतु इन रोगाणुओं को गौण कारण ही माना गया है। मुख्य कारण तो शरीर में दोषों का असंतुलन और धातुओं का विकार ही माना गया है। वैसे तो अनेक व्यक्तियों के गले मे यक्ष्मा—संबंधी रोगाणु पाए जाते हैं, परंतु वे सभी इस रोग का शिकार नहीं होते। जैसे बंजर भूमि में यदि बीज डाला जाए, तो वह निष्क्रिय पडा रहता है, वह उगता नहीं है, ठीक इसी प्रकार जब तक शरीर में दोष प्रकुपित नहीं होते तब तक ये रोगाणु भी रोग को उत्पन्न नहीं कर पाते आयुर्वेद के अनुसार, दोषों के प्रकोप के लिए निम्नलिखित चार तत्व बहुत महत्वपूर्ण माने गये हैं:

1. भोजन—ग्रहण में अनियमितता;
2. अपनी शाक्ति से अधिक मेहनत या शारीरिक व्यायाम करना;
3. मल, मूत्र आदि स्वाभाविक वेगों को रोकना;
4. बहुत अधिक संभोग करना।

लक्षण

यक्ष्मा के रोगी का वजन बहुत तेजी से कम होता जाता है। उसे बुखार और खांसी की शिकायत रहती है। इसके अतिरिक्त आवाज में भारीपन, भूख कम लगना, छाती में दर्द, बलगम के साथ खून आना, सिर व बदन में दर्द तथा कमजोरी भी इस रोग के लक्षण हैं। रोगी को पैरों के तलुओं और हथेलियों में जलन महसूस होती है। रात को पसीना आना भी इस रोग का सामान्य लक्षण है।

उपचार

इस रोग के इलाज के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सक साधारणतः वासा नामक वानस्पतिक द्रव्य का प्रयोग करते हैं। इस पौधे के पत्तों का रस निकालकर प्रयोग में लाया जाता है। यह रस छः छोटे चम्मच की मात्रा में, शहद मिलाकर रोगी को देना चाहिए। इससे खांसी कम होती है, कफ पिघलकर बाहर निकलने में सहायता मिलती है तथा जलन दूर होती है।

महालक्ष्मी विलास इस रोग के लिए विशेष औषधि है। इसमें दूसरे द्रव्यों के अतिरिक्त सोना भी मिलाया जाता है। इसे लगभग 200 मि0ग्रा0 की मात्रा में, शहद मिलाकर दिन में तीन बार सेवन कराना चाहिए। जब यक्ष्मा के रोगी को पुराना ब्रांकाइटिस और जुकाम हो, तो यह औषधि बहुत लाभदायक सिद्ध होती है। बहुत अधिक बुखार, हथेलियों और पैरों के

तलुओं में जलन और रात के समय पसीना आने पर स्वर्ण वसंत मालती नामक औषधि विशेष रूप से लाभ पहुंचाती है। इसमें अन्य द्रव्यों के अलावा मोती और सोना मिले होते हैं।

इस रोग में लहसुन भी बहुत उपयोगी औषधि है। 2 ग्रा0 के लगभग (30 ग्रेन) लहसुन लेकर उसे 240 मि0लि0 (8 ओंस) दूध और 960 मि0लि0 पानी के साथ उबालें। जब एक–चौथाई शेष रह जाए, तो इसे छानकर रोगी को पिलाएं। यह औषधि वाला दूध दिन में दो बार रोगी को पिलाना चाहिए।

रोगी की पाचन–शक्ति बढ़ाने के लिए 30 मि0लि0 (2 छोटे चम्मच) द्राक्षासव बराबर मात्रा जल में मिलाकर पिलाना चाहिए। यह दिन में दो बार भोजन के बाद दिया जाता है। टी0बी0 के रोगी के लिए च्यवनप्राश भी बहुत अच्छी औषधि है। इसमें आंवला एक महत्वपूर्ण द्रव्य है। यह छाती के सभी प्रकार के रोगों में तो लाभकारी है ही, एक अच्छा टॉनिक भी है। अतः इससे शरीर को पोषण मिलता है। यह एक छोटे चम्मच की मात्रा में दिन में दो बार खाली पेट में दूध के साथ सेवन कराना चाहिए। जैसे ही रोगी की पाचन–शक्ति में सुधार हो, च्यवनप्राश की खुराक बढ़ा देनी चाहिए। यह औषधि की अपेक्षा खाद्य–पदार्थ अधिक माना जाता है। अतः एक दिन में दो से चार औंस (60–120 मि0ग्रा0) में दिया जा सकता है। अधिक मात्रा में लेने से रोगी की भूख कुछ कम हो सकती है, परंतु इससे लाभ बहुत अधिक मिलता है।

यक्ष्मा रोग की चिकित्सा के लिए पिप्पली का प्रयोग भी किया जाता है। यह द्रव्य भी च्यवनप्राश में डाला जानेवाला महत्वपूर्ण द्रव्य है। एक अकेले औषधि द्रव्य के रूप में इसका प्रयोग चूर्ण बनाकर किया जाता है। एक चम्मच यह चूर्ण शहद में मिलाकर दिन में तीन बार रोगी को देना चाहिए।

इस रोग में सभी सूखे मेवे, खासकर किशमिश और बादाम रोगन बहुत लाभ पहुंचाते हैं। किशमिश शरीर को पुष्ट करने के साथ–साथ इस रोग को भी ठीक करती है। सब्जियों में सहजन की फलियां, परवल और कंदुरू इस रोग के लिए उपयोगी हैं।

आहार

टी0बी0 के रोगी को चावल, गेहूं और दालें अधिक से अधिक मात्रा में देनी चाहिए, जितना कि वह खा सके। दूध जैसे पोषक पदार्थ खाने को देने चाहिए। बकरी का दूध इस रोग के लिए अच्छा है। गाय का दूध और इससे बने पदार्थों, विशेषकर घी और मक्खन के सेवन से रोगी को बहुत लाभ मिलता है। खट्टे पदार्थ, जैसे–दही और कफ को बढ़ाने वाले खाद्य–पदार्थ जैसे– केला और अमरुद इस रोग के लिए बहुत हानिकारक हैं।

अन्य आचार–व्यवहार

प्रातःकाल ताजी हवा में तेज गति से सैर करना इस रोग में बहुत लाभ पहुंचाता है। रोगी को अधिक शारिरिक और मानसिक श्रम नहीं करना चाहिए। मैथुन क्रिया से बचना चाहिए। क्रोध, चिंता और शोक रोग में वृद्धि करते हैं, अतः इनसे बचकर रहना रोगी के लिए अच्छा है।

शराब की लत छुड़ाने का आयुर्वेदिक उपचार

—डॉ० भगवान दास जी

1. यूँ तो मद्यपान सर्वथा त्यक्तव्य है, परन्तु अधिक मात्रा में मद्य का सेवन विष माना गया है, जिसकी चिकित्सा आवश्यक है।

2. धनिया पाउडर, काली मिर्च पाउडर और मिश्री का समभाग में मिश्रण लें और लगभग 1 चम्मच कटोरी पानी में भिगोकर रात भर ऐसे ही रहने दें। अगली सुबह खाली पेट इसे छानकर पी जाएँ। इस मिश्रण में anti oxidant गुण होते हैं। जो कि मद्य के विषाक्त असर को कम करने में मदद करते हैं।

3. 1 नींबू के रस में चीनी और अल्प मात्रा में नमक मिलाएँ और इसे सुबह—सुबह लिया करें यह भी शराब के विषाक्त असर को कम करके शरीर को डिटोक्सीफाई करने में मदद करता है।

4. 25 ग्राम अजवायन बीजों को 125 मि.ली. पानी में उबालें और प्रतिदिन 1—2 बार पीया करें।

5. जब कभी शराब की तीव्र इच्छा हो तो उस समय कुछ मीठा खा लिया करें। अनेक रोगियों ने इस प्रयोग के बाद आराम बताया है।

6. अनेक आयुर्वेद विशेषज्ञ शराब की लत छुड़ाने के लिए भोजन में दही का कुछ अधिक सेवन करने की सलाह देते हैं।

7. अनार, सेब अथवा अंगूर का रस यदि नियमित लिया जाय तो भी शराब की इच्छा में कमी आती देखी गयी है।

8. 10 ग्राम शुद्ध घी को मिश्री के साथ सुबह सेवन करना चाहिए। इससे शरीर में उपस्थित विषों का शमन होता है, ऐसा आयुर्वेद विशेषज्ञों का मत है।

9. पानी में कुछ खजूर घिसें तथा दिन में दो या तीन बार इस मिश्रण का सेवन करें।

10. करेले के रस में थोड़ी छाछ मिलाकर प्रतिदिन पीयें।

11. गाजर शराब पीने की इच्छा को कम करने में सहायक होता है। 1 गिलास गाजर का जूस पीयें और आपको शराब की इच्छा में खुद ही कमी प्रतीत होने लगेगी।

12. किशमिश का 1—2 दाना मुँह में डालकर चूसें इसके अलावा किशमिश के शरबत का भी सेवन करें।

13. शिमला मिर्च (कैप्सकम) लेकर जूसर से उसका रस निकाल लीजिए। इस रस का सेवन दिन में दो बार आधा—आधा कप; भोजन के बाद करें। इस उपाय से शराब की तलब अपने आप घटने लगती है।

14. अदरक के छोटे—छोटे टुकड़े कर लें और उसमें नींबू निचोड़ कर थोड़ा—सा काला नमक मिलाकर इसको धूप में सुखा लें। सुखाने के बाद अदरक के टुकड़ों को अपनी जेब में रख लें। जब भी दिल करे तभी इसे चूसना शुरु कर दें। कुछ ही दिनों में आप शराब की लत से मुक्ति पा लेंगे।

—सत्यार्थ सौरभ से साभार

वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर (प्रथम स्तर)

(17 नवम्बर सायंकाल से प्रातः 24 नवम्बर 2019)

स्थान : वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून

यदि आप सत्य, सनातन वैदिक सिद्धान्त को आत्मसात् कर वैदिक साधना पद्धति के शुद्ध स्वरूप को प्रायोगिक स्तर पर समझकर स्वयं तथा ईश्वर की यथार्थ, निर्भ्रान्त अनुभूतियों को स्पर्श करना चाहते हों तो आपका वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून में 17 नवम्बर 2019 सायंकाल से प्रारम्भ होकर प्रातः 24 नवम्बर 2019 को समाप्त होने वाले वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर प्रथम स्तर में भाग लेना सार्थक हो सकता है।

यह शिविर आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य के मार्गदर्शन में होगा। इस शिविर में वैदिक योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण तथा योग्यता व पात्रतानुसार शंका समाधानपूर्वक साधना हेतू मार्गदर्शन दिया जायेगा। समस्त दैनिक व्यवहार में मन को चिन्ता, तनाव से रहित कर शान्त व समता में बनाये रखना किस प्रकार से सम्भव हो सकता है, इसका प्रशिक्षण भी इसके अन्तर्गत होगा।

1. यह शिविर आवासीय है। शिविर में महिलाओं व पुरुषों की निवास व्यवस्था पृथक–पृथक होती है।
2. सम्पूर्ण शिविर में विधिवत् भाग लेने के इच्छुक सज्जन ही आवेदन हेतू सम्पर्क करें। शिविर समापन से पूर्व वापिस जाना सम्भव नहीं हो सकेगा तथा 17 नवम्बर सायंकाल 6:00 बजे के बाद प्रवेश नही दिया जायेगा। इस कष्ट हेतु हम पूर्व से ही क्षमा प्रार्थी है।
3. प्रथम स्तर के शिविरों में भाग लेने वाले साधक ही आगे गम्भीर साधना के शिविरों में भाग ले सकेंगे।
4. शिविर में अधिकाधिक 125 साधक साधिकाओं की ही व्यवस्था सम्भव है। अतः इच्छुक जन पूर्व ही अपना स्थान सुरक्षित करा लें। पुराने शिविरार्थी भी भाग ले सकते है।
5. स्थान आरक्षण व अन्य जानकारी हेतु इन महानुभावों से सम्पर्क करें :–1 श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, दिल्ली, (मो0नं0–09310444170) समय दिन में 10:30 बजे से सायं 4:00 बजे तक, एवं रात्री 8 बजे से 10 बजे तक, 2. श्री प्रेम जी – 8076873112, 9456790201, समय प्रातः 10:30 बजे से सायं 4:00 बजे तक, एवं रात्री 8 बजे से 9:30 बजे तक,
6. अपनी वापिसी का आरक्षण पूर्व ही करा कर आयें। शिविर के मध्य अग्रिम यात्रा हेतु आरक्षण करवाने की सुविधा हमारे पास नही है।
7. शिविर में भाग लेने की न्यूनतम आयु सीमा 17 वर्ष है। अपने साथ संचिका, पेन, टार्च व फल काटने हेतु चाकू अवश्य लायें।
8. शुल्क–इस ईश्वरीय कार्य में शिविर हेतु श्रद्धा व भावनापूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना सभी प्रतिभागियों के लिये अनिवार्य है।
9. आवश्यकता होने पर आचार्य आशीष जी (मो0नं0–09410506701) से रात्रि 8.00 बजे से 9.00 बजे के मध्य सम्पर्क कर सकते है।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री	**ई० प्रेम प्रकाश शर्मा**	**श्री अशोक वर्मा**
अध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष
09710033799	09412051586	09412058879

वैदिक संध्या प्रशिक्षण शिविर

(26 नवम्बर सायंकाल से 01 दिसंबर प्रातःकाल तक)

एवं

दैनिक यज्ञ एवं प्रातःकालीन–सांयकालीन मन्त्र प्रशिक्षण शिविर

(3 दिसंबर सांयकाल से 8 दिसंबर 2019 प्रातःकाल तक)

स्थान – वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड)

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून में वैदिक संध्या एवं वैदिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन उपरोक्त तिथियों में आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य के निर्देशन में होगा। वैदिक संध्या के यथार्थ स्वरुप व क्रियात्मक पक्ष को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कृत ''पंचमहायज्ञविधि'' के माध्यम से सूक्ष्मता से समझने व सीखने का अवसर इन शिविरों में उपलब्ध होगा। वैदिक संध्या के गूढ आध्यात्मिक पक्ष को महर्षि की मेधा प्रज्ञा से समझकर ही साधक–साधिकायें वर्तमान में प्रचलित संध्या के स्थूल स्वरुप से ऊपर उठकर संध्या की आध्यात्मिक गहराई में प्रविष्ठ हो आध्यात्मिक आह्लाद व स्वयं में रुपांतरण अनुभव कर सकेंगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कृत ''पंचमहायज्ञविधि'' ही वैदिक संध्या को समझने का एकमात्र प्रामाणिक अनुपम ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के माध्यम से संध्या को समझना अनेक साधक–साधिकाओं के लिए आश्चर्यजनक रुप से बहुत नवीन और लाभकारी हो सकेगा।

दैनिक यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले मन्त्रों के अर्थों व क्रियाओं के आध्यात्मिक व वैज्ञानिक स्वरुप को समझकर यज्ञ करना आत्मजागरण में विशेष लाभकारी व सहायक होता है। दैनिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर में यज्ञ के आध्यात्मिक व वैज्ञानिक पक्ष को मन्त्रार्थों के अनुसार विस्तारपूर्वक हृदयङ्गम करने का विशिष्ट अवसर उपलब्ध होगा। आचार्य आशीष जी की जटिल विषयों को भी अत्यंत सरलता व रोचकता के साथ गहराई से स्पष्ट करने की योग्यता को देश–विदेश के हजारों साधक–साधिकाओं ने अनुभव किया व लाभ उठाया है। इन शिविरों के माध्यम से हम उनसे अधिकाधिक लाभ प्राप्त करें जिससे हमारे संध्या व हवन मात्र यांत्रिक न हों अपितु हमें आत्मजागरित करने वाले हो सकें।

इन शिविरों में साधक–साधिकायें प्रातः व सायंकालीन दिनचर्या व ध्यान–साधना व्यक्तिगत रुप से करेंगे। स्थानीय इच्छुक महानुभाव भी कक्षाओं में भाग ले सकते हैं। स्थानीय महानुभाव कक्षाओं के समय की जानकारी सम्पर्क सूत्र में उपलब्ध नम्बरों पर कर सकते हैं।

शिविर शुल्क– इस ईश्वरीय कार्य में प्रत्येक प्रतिभागी द्वारा यथासामर्थ्य स्वैच्छिक सहयोग देना अनिवार्य है। साथ लाने योग्य अनिवार्य वस्तुयें – 1. पंचमहायज्ञविधि 2. दैनिक हवन मंत्रों की पुस्तक 3. कापी, पैन, टार्च, चाकू आदि। शिविर में कक्षाओं की किसी भी प्रकार की ऑडियो, वीडियो रिकार्डिंग निषिद्ध है।
शिविर में स्थान सीमित हैं।

स्थान आरक्षण हेतु निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क करें।

1. श्री नन्दकिशोर जी, मो०–9310444170 (प्रातः 10 से सायं 4, रात्रि 8 से 10 बजे तक)
2. श्री प्रेम जी, मो० 8076873112, 9456790201 (प्रातः 10 से सायं 4.30 रात्रि 8 से 9.30 बजे तक)

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
अध्यक्ष
09710033799

ई० प्रेम प्रकाश शर्मा
सचिव
09412051586

Delite KOM

freedom to work...

DELITE KOM LIMITED

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

Delite KOM

DELITE KOM LIMITED

Kukreja House, IInd Floor, 46, Rani Jhansi Road, New Delhi-110055

Ph. : 011-46287777, 23530288, 23530290, 23611811 **Fax :** 23620502 **Email :** delite@delitekom.com

ISO:9001 DNV CERTIFIED

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2018-2020

समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

With Best
Compliments From

MUNJAL
SHOWA

हाई क्वालिटी
शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

* स्ट्रट्स/गैस स्ट्रट्स
* शॉक एब्जॉर्बर्स
* फन्ट फोर्कस
* गैस स्प्रिंगस/विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बस बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर/फोर व्हीलर उदयोगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL
SHOWA

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।

संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com